ओ३म्

भ्रान्ति निवारण

७० अन्धविश्वासों की वास्तविक व्याख्या

लेखक :

स्व० श्री सीताराम आर्य

प्रकाशक :

राममूर्ति प्रकाशन

राममुनि आर्य वानप्रस्थ, लालबहादुर शास्त्री नगर
(कमला नगर) पैट्रोल पम्प के सामने वाली गली,
झज्जर रोड़, रोहतक-१२४००१ (124001) (हरियाणा)
चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् २०७५, अप्रैल 2018 ई०
०१२६२-२४८०५६ मो० ०९०३४८६५०७३
(01262-248056 मो0 09034865073)

पांचवाँ संस्करण

मूल्य : बारह रुपये

रोग निवारक उपचार

खाँसी मिटाने के लिये

१. मुलहठी को पानी से धोकर दिन में तीन चार टुकड़े चूसने
खाँसी में लाभ होता है।

२. अदरक का रस एक चम्मच, तुलसी के दो पत्ते, काली मि
के दो दाने पीस कर पीयें ऊपर से थोड़ा सा गर्म पानी पीवें, इ
प्रकार दिन में दो-तीन बार पिलायें।

३. काली मिर्च चार दाने मिश्री के साथ चबा कर मुख में रख
रस चूसने से काली खाँसी में लाभ होता है। ४. छोटी इलायच
और लौंग को चबा कर चूसने से भी गले की खराश व खाँसी
लाभ होता है। ५. हम दर्द फार्मेसी की सुआलीन की गोली दि
में चार बार चूसने से खाँसी, गले की खराश में लाभ मिलता है।

दस्त रोकने के लिये

१. पके हुये केले को अच्छी तरह मसल कर उसमें सेन्धा नम
मिला कर खाने से पेचिस में लाभ होता है।

२. इसबगोल का छिलका दही में थोड़ा सा नमक मिला कर खा
से लाभ होता है। ३. बेलगिरी का गुद्दा खाण्ड मिलाकर मथक
पीने से खूनी दस्तों में लाभ होता है।

विषय सूची

सं.	विषय	पृष्ठ
	ईश्वर है या नहीं	..................९
	ईश्वर का असली नाम क्या है?	..................९
	ईश्वर स्मरण या कीर्तन	..................१०
	सृष्टि के आदि का सम्विधान वेद	..................११
	धर्म विचार	..................१२
	पढ़ने योग्या पुस्तकें	..................१४
	मन्त्र	..................१४
	मानव योनि का लक्ष्य मोक्ष	..................१५
	स्वर्ग-नरक	..................१६
०.	आर्य शब्द से डर क्यों?	..................१७
१.	संन्यासी या बाबे	..................१८
२.	देवता	..................१९
३.	तीर्थ क्या है	..................२०
४.	गुरू किसे कहते हैं	..................२१
५.	यज्ञोपवीत (जनेऊ)	..................२१

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ
१६.	श्री महर्षि दयानन्द जी	....
१७.	श्री रामचन्द्र जी	....
१८.	श्री हनुमान जी	....
१९.	श्री कृष्णचन्द्र जी	....
२०.	अभिवादन का शब्द क्या है?	....
२१.	वानप्रस्थ यानि तीसरी अवस्था	....
२२.	रामायण	....
२३.	महाभारत	....
२४.	गीता	....
२५.	पुराण	....
२६.	कुरान	....
२७.	बाईबिल	....
२८.	सुर्यग्रहण क्या है?	....
२९.	मुहूर्त	....
३०.	व्रत उपवास	....
३१.	मूर्ति की असली पूजा	....
३२.	जन्म पत्री	....
३३.	पितरों के श्राद्ध	....
३४.	जाति या वर्ण	....

सं.	विषय	पृष्ठ
.	त्यौहार	४३
.	आर्यसमाज	४५
.	सनातन धर्म	४६
.	जैन	४७
.	कानून	४८
.	हिन्दू	४९
.	नशा	५०
.	भूत को समझें	५२
.	क्या गंगा पाप काटती है?	५३
.	टोणे तावीज़	५४
.	झाड़ा	५४
.	फेटूड़ा	५५
.	पीर	५५
.	सती	५६
.	मुण्डन (बच्चों के बाल उतरवाना)	५७
.	कान परोजन (कर्णछेदन का बिगड़ा हुआ नाम)	५८
.	साहबा	५९
.	गूगा	५९

क्रं. सं.	विषय	पृष्ठ
५३.	वस्तु	................६१
५४.	डाकण	................६२
५५.	मकान	................६२
५६.	यात्रा	................६३
५७.	काँवड़	................६४
५८.	सम्विधान	................६५
५९.	गुरुग्रन्थ	................६९
६०.	बामण या ब्राह्मण	................६९
६१.	लोग नास्तिक क्यों बनते हैं?	................७०
६२.	ईश्वर, जीव व प्रकृति	................७१
६३.	तप	................७२
६४.	सावा (विवाह)	................७३
६५.	प्रेत	................७४
६६.	शनि देवता	................७४
६७.	नीम्बू-मिर्च	................७५
६८.	मकान पर काली हाँडी	................७६
६९.	नेत्रदान	................७७
७०.	मृतक क्रिया	................७८

भूमिका

भ्राँन्ति निवारण नामक यह पुस्तक लिखने का कारण मेरा गाँव व शहर में रहकर गाँव के व शहर के भोले भाले शरीफ व्यक्तियों, महिलाओं को धूर्तों के हाथों लुटते देखना है। इस लघु पुस्तक में मैने जो ७० (सत्तर) प्रकार की भ्राँन्तियाँ व अनभिज्ञता देखी उन पर विस्तार से लिख कर समझाने का प्रयत्न किया है ताकि लोग अंधविश्वास से छूट कर जहाँ लुटने से बचें वहाँ अपने मानव जीवन की कीमत समझ कर उसे सफल बना सकें। इस पुस्तक को बच्चा, बूढ़ा, जवान, महिला, पुरुष जो भी पढ़ेगा लाभान्वित होगा क्योंकि इसमें गाँव वा शहर में जो भ्राँन्तियाँ हैं। उनकी सही जानकारी उनकी ही सरल भाषा में लिखी हैं। आशा है इन ७० (सत्तर) भ्राँन्तियों को पढ़ कर इन पर अमल करेंगे और अपने जीवन को सुखी करेंगे तो मैं अपना यह परिश्रम सफल समझूँगा।

कुछ लोग अपनी अनभिज्ञता के कारण आर्यसमाज वा आर्य शब्द के नाम से बिदक जाते हैं। किन्तु मैंने यह पुस्तक

आर्यसमाज वा आर्यों के लिये नहीं लिखी, यह जनसाधारण के लिये लिखी है, वह चाहे किसी भी पन्थ का क्यों न हो किसी बात को परखने के लिये ३ तीन कसौटियाँ होती हैं- तर्क, बुद्धि और विज्ञान। मैंने भी इन तीनों के आधार पर ही यह पुस्तक लिखी है। आप भी परखें। जो कोई पाठक राग द्वेष छोड़ कर इसमें लिखित बातों में से किसी पर विचार करने को लिखेगा, या मुझसे सम्वाद करेगा उस पर अवश्य विचार किया जायेगा।

सीताराम आर्य

लेखक

सम्मति

श्री सीताराम जी आर्य द्वारा लिखित ७० (सत्तर) भ्राँन्तियाँ एवम् उनका वास्तविक स्वरूप पुस्तक की पाण्डुलिपि मैंने देखी। इस पुस्तक में लेखक ने महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के बारे में लोगों के मन में जो भ्राँन्तियाँ हैं उन भ्राँन्तियों को ना केवल दूर करने का प्रयास ही किया है अपितु यथार्थ स्वरूप को बहुत ही उत्तम ढँग से प्रस्तुत भी किया है। जैसे राम, कृष्ण, हनुमान, तीर्थ, भूत, प्रेत, श्राद्ध, काँवड़, सम्विधान, ईश्वर आदि क्या-क्या हैं? हमें राम, कृष्ण, हनुमान आदि के जीवन चरित्र का अध्ययन करके उनके उत्तम गुणों को जीवन में धारण करना चाहिये और उनके सही रूप को समझना चाहिये।

चित्र की पूजा ना करके चरित्र की पूजा यानि सत्कार करना चाहिये। श्री आर्य जी ने इस ग्रन्थ में आर्य श्रेष्ठ, सदाचारी व्यक्ति को माना है, यह यथार्थ ही सत्य है इस देश में रहने के कारण तो सारे देशवासी आर्य हैं। किन्तु जिस व्यक्ति का चरित्र उत्तम है, चाहे वह किसी भी देश का

निवासी है, वह आर्य है। परस्पर अभिवादन करने के लिये नमस्ते शब्द ही सर्वाधिक उपयोगी क्यों है? इसका इस पुस्तक में आपको उत्तर मिलेगा। कुल ७० (सत्तर) प्रकार की भ्राँन्तियाँ वा उनका वास्तविक स्वरूप आपको इस छोटी सी पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा। इस पुस्तक में कुछेक बातें आपको विचित्र सी प्रतीत होंगी, शायद पाठकों की समझ से दूर हों। जिन बातों पर आपके मन में शंका हो, आप श्री आर्य जी से सम्पर्क करके उनका समाधान प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तक के लेखन का उद्देश्य सत्य, असत्य का निर्णय एवम् चौथे नियम के अनुसार असत्य को छुड़वा कर सत्य को प्राप्त कराना मात्र है। किसी के हृदय को लेशमात्र भी पीड़ा पहुँचाने की भावना नहीं है। आशा है इस पुस्तक से पाठकगण अधिक से अधिक लाभ उठायेंगे।

विश्वामित्र शास्त्री

पूर्व प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

१. ईश्वर है या नहीं

सड़क पर कहीं दस ईंटें कहीं बीस ईंटें पड़ी हों तो आप कहेंगे कि यह किसी ट्रैक्टर से पड़ी हैं। यदि किसी सड़क पर ठीक आठ-आठ फुट के फाँसले से दो-दो ईंट ऊपर-नीचे जँचा कर रक्खी हों तो आप कहेंगे कि ऐसा अपने आप नहीं हो सकता जरूर किसी ने इन्हें व्यवस्थित ढँग से रक्खा है। इसी तरह ठीक अपने निर्धारित समय पर सूर्य नियम से चल रहा है। निर्धारित समय से ही चन्द्रमा भी चल रहा है और निर्धारित समय पर सृष्टि बनती या बिगड़ती है। भूगोल के अन्दर सभी ग्रह, उपग्रह, चन्द्र, सूर्य आदि बिना किसी दुर्घटना के अपनी गति से अरबों वर्ष से चल रहें हैं, भला इन्हें ईश्वर के बिना कौन नियन्त्रित कर रहा है। इससे सिद्ध होता है कि इनकी रचना करने वाला कोई न कोई ईश्वर अवश्य है। मानवों में भय, लज्जा, शंका, उत्पन्न करने वाला भी ईश्वर ही है।

२. ईश्वर का असली नाम क्या है?

ईश्वर एक है और उसका नाम भी एक ही है और वह नाम है 'ओ३म्'। अन्य सभी नाम जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश

आदि अलग से ईश्वर या देव नहीं हैं परम पिता परमात्मा जिस समय जैसा काम करता है वैसे-वैसे उसके नाम पड़ते जाते हैं। जैसे आपका नाम तो है श्रीनिवास। आप साईकिल लेकर जा रहे हैं पीछे से किसी ने आवाज़ दी 'ओ साईकिल वाले', एक नाम आपका साईकिल वाले हो गया। स्कूटर लेकर जा रहे हैं 'स्कूटर वाले' भी एक नाम हो गया। यह भ्राँति नहीं रहनी चाहिये कि ईश्वर कई हैं या उसके समानान्तर और भी भगवान् या उससे छोटे कोई ओर भगवान् या देवता भी हैं। ओ३म् में तीन अक्षर हैं जिनका अर्थ है सृष्टि कर्त्ता, पालन कर्त्ता, संहार कर्त्ता। ये तीनों शक्तियाँ अन्य किसी में नहीं हैं। अन्य अनेक नाम ईश्वर के गुणवाचक हैं।

३. ईश्वर स्मरण या कीर्तन

वेद ने भी कहा है 'ओ३म् क्रतो स्मर' यानि ईश्वर को याद रक्ख, ना कि केवल मात्र ओ३म् ओ३म् रटता रहे। कुछ लोग यह सोचते हैं कि ओ३म् या राम-राम रटते रहना चाहिये, इसी से भगवान् खुश हो जायेंगे। यह एक भ्राँन्ति है। क्या ईश्वर चापलूस है? जो व्यक्ति ओ३म्-ओ३म् या राम-राम दिन रात रटता है किन्तु ईश्वर के आदेश वेद के विरुद्ध चलता है, क्या

परमात्मा उससे खुश होंगे? जैसे एक बच्चा स्कूल में ना पढ़े, उद्यम मचाये किन्तु वह मास्टर जी मास्टर जी रटता रहे तो क्या अध्यापक उससे खुश होंगे? ईश्वर का नाम चाहे एक बार भी ना लें उसकी आज्ञानुसार (वेदानुसार) चलते रहें तो वह अवश्य खुश होंगे।

४. सृष्टि के आदि का सम्विधान वेद

प्रत्येक सृष्टि (वर्तमान भूमि) की उम्र चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष होती है। यह सृष्टि आज से (एक अरब छियानवे करोड़, आठ लाख, तरेपन हज़ार, एक सौ उन्नीस वर्ष पहले बनी थी। यह सृष्टि परमात्मा ने जीव को कर्मों का फल भुगतने वा करने के लिये रची। सर्वप्रथम तिब्बत की भूमि पर अमैथुनी नौजवान स्त्री-पुरुषों की उत्पत्ति की। मानव इस सृष्टि का वा सृष्टि पर उत्पन्न हुये भोग योनी जीव व अन्य फल औषधि आदि का उपयोग कैसे-कैसे कर सके, इसके लिये परमपिता परमात्मा ने पैदा किये गये सभी मानवों में उन चार व्यक्तियों को चुना जिनके इससे पूर्व की सृष्टि में सबसे उत्तम कर्म थे। उन्हें वेद रूपी ज्ञान प्राणी मात्र के कल्याणार्थ दिया, उसका नाम वेद है, जो संख्या में चार हैं जिनका नाम है ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद। इनमें (बीस हज़ार, चार सौ,

सोलह) मन्त्र हैं। मन्त्र केवल वेद में ही होते हैं। बाकी ग्रन्थों में श्लोक होते हैं। इन मन्त्रों में सभी प्राणियों के कल्याणार्थ ज्ञान, विज्ञान भरा पड़ा है। कुछ लोगों की भ्राँन्ति है कि वेद केवल संस्कृत में हैं और हमारी पहुँच से बाहर हैं। ऐसा कह कर वे वेद रूपी ज्ञान सागर से वञ्चित रह जाते हैं। किन्तु ऐसा नहीं है। अब तो महर्षि दयानन्द जी की कृपा से वा उनके अनुयायिओं के परिश्रम से वेद सरल हिन्दी में भी विद्यमान हैं जिसे साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी पढ़ कर लाभ उठा सकता है। जो धूर्त ओझे वेद या मन्त्र के नाम से ढोंग करते हैं उनका उद्देश्य वेद ज्ञान देना नहीं किन्तु परधन हरण है। उनसे बचना चाहिये। मन्त्र हमारे कल्याणार्थ होते हैं, किसी के नुकसान के लिये नहीं। मन्त्र के अर्थ विचार हैं, जादू टोणा नहीं। ज्ञान कैसे दिया पुस्तक हाथ में देकर नहीं उदाहरण जैसे हम स्वपन अवस्था में लेटे-लेटे ही मन के द्वारा सारे संसार में जो वस्तु इन आँखों से देख रखी हैं वह सब आत्मा में अकिंत हो जाती है फिर आत्मा मन को प्रेरित करती है तब मन कार्य करता है। मन एक जड़ वस्तु है वह स्वयम् कुछ नही कर सकता आत्मा एक चेतन वस्तु है यह मन को प्रेरित करती है। तब मन कार्य करता है। ऐसा जानों और मानों।

५. धर्म विचार

हवन करना सन्ध्या करना, मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे जाना, गंगा जाना, व्रत उपवास, रोज़े रखना, चढ़ावा चढ़ाना य

माथा टेकना इन सब में किसी का नाम धर्म नहीं है। ये सब कर्म हैं फिर 'धर्म' क्या है? मिलावट ना करना, कम ना तौलना, रिश्वत ना लेना, धोखा ना देना, अन्याय ना करना, जो कार्य मैं अपने लिये दूसरों से चाहता हूँ वही दूसरे के लिये भी करना, अपने कर्त्तव्य को निष्ठापूर्वक समझना और करना ही धर्म है। आज की सरकार कहती है। कि हम धर्म निरपेक्ष हैं। यदि कल को कोई दुश्मन हमारे देश पर हमला कर दे, उस समय हमारी सरकार का धर्म है उसका मुँह तोड़ उत्तर देना। क्या यह धर्म निरपेक्ष सरकार अपना धर्म नहीं निभायेगी? पाप और धर्म केवल मनुष्य योनी में ही किये जाते हैं अन्य किसी योनी में नहीं। शेर रोज़ाना कितने जानवर मारता है। छिपकली रोज़ाना डेढ सौ-दो सौ जानवर मारती है, किन्तु इन्हें कोई पाप नहीं लगता। एक गऊ अपने जीवन में हज़ारों लीटर दूध देकर कितना परोपकार करती है, किन्तु उसे कोई धर्म नहीं होता। मनुष्य यदि बिना अपराध के एक कीड़ी भी मारता है तो उसे पाप लगता है। एक पैसा भी दान देता है, तो धर्म होता है। इसलिये पाप करने से बचें और धर्म के कार्य ही करते रहें।

६. पढ़ने योग्य पुस्तकें

पुस्तकें पहचानने की चार कसौटियाँ हैं जो पुस्तक इन चारों कसौटियों पर खरी उतरें वही पढ़ने योग्य हैं बाकी नहीं १. वे कसौटियाँ हैं जो वेदानुकूल हों २. तर्क की कसौटी पर पूरी उतरें ३. बुद्धि जिसे स्वीकार करे ४. विज्ञान पर खरी हों। जो पुस्तक इन चारों कसौटियों पर खरी नहीं होती उन्हें पढ़कर मानव जीवन का यह कीमती समय नहीं गँवाना चाहिये। ऋषिकृत पुस्तकों से जो एक घन्टे में ज्ञान प्राप्त होगा, मनुष्यकृत पुस्तकों से वह दस घण्टे में भी मुश्किल है, इसका भी ध्यान रखना चाहिये। इन चारों कसौटियों पर ये पुस्तकें खरी हैं-छः दर्शन, ग्यारह उपनिषद्, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त, ब्राह्मण ग्रन्थ, शतपथ आदि इनको पढ़ना मोतियों को पाना है।

७. मन्त्र

मन्त्र केवल वेद में ही होते हैं अन्य कोई मन्त्र नहीं होते। उन मन्त्रों में प्राणी मात्र के कल्याणार्थ, इस संसार से कैसे लाभ उठाया जाये, स्वर्ग, नरक, मोक्ष आदि कैसे मिले, आदि का उपदेश है। किसी प्राणी का बुरा करने का एक भी

मन्त्र नहीं है। जो लोग कहते हैं 'मैं मन्त्र से भस्म कर दूँगा, मैं नुकसान कर दूँगा' यह सब कायरों को डराने के लिये परपँच हैं, धोखा है सो इनके जाल से बचना चाहिये।

८. मानव योनि का लक्ष्य मोक्ष

कुछ लोग जीव को ईश्वर में लीन होने को ही मोक्ष मानते हैं यदि ऐसा ही है तो जीव का अस्तित्व ही समाप्त हो गया फिर मोक्ष का सुख कौन भोगेगा यह कैसा मोक्ष, जीव केवल मात्र मानव योनी में ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। अन्य योनियों में नहीं। छल, कपट, स्वार्थ आदि त्याग कर महर्षि दयानन्द की तरह निस्वार्थ कार्य करने पर ही मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है, कुछ को एक जन्म में, कुछ को कई जन्मों के कर्मों से मोक्ष मिलता है। जहाँ बहुत लम्बी अवधि इकत्तीस नील, दस खरब, चालीस अरब वर्ष तक मुक्ति में जीव अपने सूक्ष्म शरीर के साथ बिना पैरों के घूमता है, बिना आँखों के देखता है, बिना कानों के सुनता हुआ, आनन्दपूर्वक रहता है। इसी का नाम मोक्ष है। मानव योनी का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। कोठी

कार, पत्नि, पति, बेटे, पोते यह सभी साधन हैं साध्य नहीं। अपने अच्छे कर्मों के कारण सभी सुख सुविधायें तो एक कुत्ता भी मूर्ख पूँजीपति के पास जाकर पा लेता है किन्तु मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता।

९. स्वर्ग-नरक

लोगों की धारणा है कि स्वर्ग-नरक भूमण्डल में अलग से हैं जब राकेश शर्मा चन्द्रमा पर गया उससे पूछा कि क्या आपको रास्ते में कहीं स्वर्ग-नरक मिला तो उसने बताया कि रास्ते में आकाश के सिवाय कुछ नहीं मिला। स्वर्ग-नरक दोनों यहीं धरती पर ही हैं। घसीटू राम के घर पैदा होना नरक, धनपत राम के घर पैदा होना ही स्वर्ग है। हाँ ऐसा तो होता है। कि पिछले कर्मों से मानव नरक में पैदा होकर स्वर्ग में जा सकता है स्वर्ग में पैदा होकर भी नरक में जा सकता है जैसे गुजरात के धीरू भाई नरक में पैदा हुये। सिर पर टोकरा रख कर प्याज़ बेचने वाला व्यक्ति अपनी लग्न और मेहनत से देश का सबसे बड़ा पूँजीपति बन कर नरक को लात मार कर स्वर्ग में जा पहुँचा। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो खूब सम्पन्न घर में पैदा होते हैं

किन्तु अपने कर्मों के कारण नशा, शराब, तम्बाकू, माँस, अण्डे, अफ़ीम, सट्टा, जुआ आदि में सब कुछ खत्म करके स्वर्ग को त्याग कर नरक में कूद जाते हैं। इसीलिये स्वर्ग में पैदा होकर नरक में जाने से बचना चाहिये। नरक में पैदा होकर स्वर्ग में जाने का प्रयत्न सबको करना चाहिये।

१०. आर्य शब्द से डर क्यों?

आर्य शब्द पर लोग आर्यसमाज का कब्जा समझते हैं जबकि यह शब्द संसार के सभी व्यक्तियों का है, आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ। क्या श्रेष्ठ केवल आर्यसमाज में ही हैं और कहीं नहीं? देखा गया है कि कई समाजों में आर्यसमाज से भी ज्यादा श्रेष्ठ व्यक्ति हैं। दुर्भाग्य यह है कि वह अपने आपको आर्य (श्रेष्ठ नहीं कहते) क्योंकि जनमानस में एक भ्राँन्ति फैल चुकी है कि आर्य उसे कहते हैं जो कुछ भी ना मानता हो। किन्तु ऐसा नहीं है। आप इसी पुस्तक में देखेंगे कि आर्य वो है जो सब कुछ यथार्थ मानता हो जैसे भूत, प्रेत, देवी, देवता, राम, कृष्ण, हनुमान आदि। इस देश का पहला नाम ही आर्यवर्त्त था आर्यों ने ही बसाया था। आपने धारावाहिक रामायण को देखा होगा

जिसमें धर्म नष्ट हो और नष्ट धर्म को आर्य पुरुष कह रहा है कि महाभारत अनुशासनिक में देखा होगा उसमें [illegible] बार-बार कृष्ण को आर्य पुरुष ही कह रहे थे कि [illegible] वाल्मीकि रामायण में देखा होगा उसमें भी बार-बार आर्य पुरुष ही कहा गया है। इन तीनों [illegible] में कहीं भी हिन्दू शब्द का प्रयोग तक नहीं किया गया। दुनियां के सभी श्रेष्ठ लोगों को अपने आपको आर्य कहने का गौरवान्वित होना चाहिये और इस पर आर्यसमाज का कब्जा नहीं मानना चाहिये।

११. संन्यासी या बाबे

संन्यास लेने का अधिकार केवल ब्राह्मण को है अन्य किसी को नहीं जिसे भी संन्यास लेना हो उसे ज्ञान द्वारा पहले ब्राह्मण बनना ही होगा। ब्राह्मणों को भी सबको नहीं। जिसे वैराग्य हो वही ले सकता है। आज जितने भगवां कपड़ों में बाबे हैं उनमें से विरक्त तो एक या दो प्रतिशत ही मिलेंगे बाकी तीन प्रकार के बाबे हैं। १. जिनके घरों में रोटी नहीं वह रोटियों के लिये या [illegible] बनने के लिये संन्यासी बन जाते हैं। २. जिनके रोटी भी है घर मकान, जायदाद भी है किन्तु बहुएं

रोटी देती नहीं उनमें से भी कुछ बाबे बन जाते हैं। ३. भगवां कपड़ों में जनता की श्रद्धा है कुछ लोग उसका फ़ायदा उठाने के लिये पैर छुआने के लिये कुर्सी हथियाने के लिये चन्दा इकट्ठा करने के लिये ऐसे लोग अपने स्वार्थ में संन्यासी बन जाते हैं। पूर्ण परीक्षण के बाद ही संन्यासियों में विश्वास करें। सच्चा एक संन्यासी जितना देश का परोपकार कर सकता है उतना सौ गृहस्थी नहीं कर सकते क्योंकि वह अपना पूर्ण समय परोपकार में ही लगाता है। जैसा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती। जिन्होंने अपना सारा जीवन परोपकार में ही लगा दिया।

१२. देवता

विचार करिये नाम पर? देवता उसे कहते हैं जो देवे जैसे वायु देवता, जो हमें प्राण देती है लेती कुछ नहीं, अग्नि देवता हमें ऊष्मता देती है लेती कुछ नहीं, पृथ्वी देवता जो हमें बसने के लिये स्थान वा अन्न देती है लेती कुछ नहीं। वे देवता कैसे जो हमारे से ही लेवें कभी ग्यारह रुपये, कभी इक्यावन रुपये का प्रसाद, कभी सवामणी का प्रसाद, कभी लँगोट यह देवता नहीं लेवता हैं। क्योंकि देता कुछ नहीं लेता ही लेता है।

एक बड़ी गम्भीर समस्या भी देश में इन कल्पित लेवताओं ने ही खड़ी की है उस पर भी विचार करें। मेरे देश में रिश्वत की नींव यहीं से पड़ी है। जब ईश्वर ही बिना रिश्वत के काम नहीं करता। ग्यारह रुपये, इक्यावन रुपये, सवामणी का प्रसाद रूपी रिश्वत लेकर काम करता है तो बन्दों का क्या दोष? हमारे यहाँ बचपन से ही भगवान् को रिश्वत देने के संस्कार डाले जाते हैं जिसने आज बड़ा भयंकर रूप ले लिया है। जब तक भगवान् को रिश्वत देना बन्द नहीं करेंगे, तब तक बन्दे भी रिश्वत लेना बन्द नहीं करेंगे। कई कहते हैं कि देवता उसी को दुःख देते हैं जो उसे मानता है फिर माना ही क्यों जाये। वैसे जड़ देवता किसी को दुःख नहीं देते खुद ही हम गलत काम करके दुःख भोगते हैं। इसी प्रकार मूर्तियाँ भी जड़ हैं ये भी किसी को सुख-दुःख नहीं देती।

१३. तीर्थ क्या है?

जो पापों से पार करे उसे तीर्थ कहते हैं। जल विशेष में स्नान करने का नाम तीर्थ नहीं है जल से शरीर की शुद्धि अवश्य होती है। आत्मा की नहीं। आत्मा की शुद्धि तो ज्ञान द्वारा ही

होती है। अपने माता-पिता, दादा-दादी, सास-ससुर गुरु (शिक्षा देने वाला) आदि की सेवा करके उनसे सत्य उपदेश वा आशीर्वाद लेना ही तीर्थ है। अन्य कोई तीर्थ नहीं है। इसलिये इनकी सेवा श्रद्धापूर्वक नित्य प्रति किया करें।

१४. गुरु किसे कहते हैं?

कहते हैं गुरु बिन ज्ञान नहीं यह बात तो सत्य है किन्तु ज़रा विचारें तो गुरु वास्तव में है कौन? जो शिक्षा दे वह गुरु, माता-पिता, आचार्य आदि। वे भी गुरु हैं जिससे आप गुर लेवें वह चाहे बच्चा ही क्यों ना हो। जो नाम मात्र के ढोंगी गुरु हैं जो खुद कुछ नहीं जानते वह चेले को क्या देंगे। लोगों ने गुरु महिमा के गीत गा-गा कर लोगों को भ्रम में डाल दिया है उससे बचना चाहिये, और जो सच्चा गुरु ईश्वर है जिसने सारे जड़ चेतन जगत् की रचना करी, उसको मानना चाहिये और उसके बताये वेद मार्ग पर चलना चाहिये।

१५. यज्ञोपवीत (जनेऊ)

प्रायः लोगों में यह धारणा बनी हुई है कि जनेऊ तो

ब्राह्मणों का चिन्ह है किन्तु ऐसा नहीं है यह ब्राह्मणों का चिन्ह नहीं द्विजों का चिन्ह है। द्विज उसे कहते हैं जो अपने कर्त्तव्यों को समझता हो। जनेऊ ऐसे है जैसे हम किसी से कर्ज़ा लेते हों। कर्ज़ा देने वाला हमारे से हस्ताक्षर करवा कर एक फाईल बना लेता है। इसी प्रकार जनेऊ भी हमारे कर्ज़े का तीन धागों का फाईल है। मनुष्य पर तीन ऋण होते हैं। ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण।

१.पितृ ऋण- माता-पिता जिन्होंने हमें जन्म देकर मल मूत्र, धोकर पढ़ा लिखा कर बड़ा किया उनका ऋण हमारे ऊपर है। जनेऊ का एक धागा आपको बार-बार याद दिलाता रहेगा कि अपने माता-पिता, दादा-दादी की सेवा करके इस ऋण को चुकाना है।

२. देव ऋण- जैसे अग्नि देवता, जल देवता, सूर्य देवता, वायु देवता, चन्द्र देवता, धरती देवता यह सभी देवता हैं। यह हमें अन्न, प्राण, स्थान, उष्णता-शीतलता आदि देते ही रहते हैं। इनका ऋण भी हमारे ऊपर है एक धागा बता रहा है कि नित्य हवन करें इन देवताओं को प्रदूषण से बचा कर शुद्ध करना

ही कर्ज़ा चुकाना है। जो कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन करना ही चाहिये। केवल हवन ही ऐसा साधन है जिससे प्रदूषण दूर होता है और किसी चीज़ से नहीं। शुद्ध घी और जड़ी बुटियों से बनी सामग्री से नित्य प्रति अपने-अपने घरों में रोगों को दूर करने के लिये हवन किया करें।

३. ऋषि ऋण- ऋषि मुनियों ने जो आर्ष साहित्य, वेद शास्त्र आदि बड़ी मेहनत के बाद हमें ग्रन्थ रच कर उनमें जो ज्ञान दिया उसे पढ़कर व उस पर चल कर अपना ऋण उतारना चाहिये।

१६. महर्षि दयानन्द जी

महर्षि दयानन्द के बारे में लोगों को बड़ी भारी भ्राँन्ति है कि ना तो दयानन्द कुछ मानता था ओर ना ही दयानन्द के अनुयायी आर्य कुछ मानते हैं। जबकि कहना तो यह चाहिये, जिसको जैसा मानना चाहिये वैसा तो दयानन्द ही मानते और जानते थे। बाकी लोग तो जैसे राम को मानते हैं किन्तु जानते नहीं। जैसा कि मैं पीछे लिख आया हूँ। देव दयनन्द इस देश में ना आते तो हम जो भगवान् का स्थान पत्थरों को दे चुके थे। भगवान् को भूल जाते। ना ही यह देश स्वतन्त्र होता।

पाँच-पाँच वर्ष की विधवायें सारे जीवन रोती रहती, ना ही उन्हें पुनः विवाह का हक मिलता। ना ही गऊशालायें खुलती। ना ही अछूतों को बराबरी का हक मिलता। दयानन्द ने हमारा और हमारे देश का ही नहीं दुनियाँ का उद्धार किया है। हमने उन्हें पत्थर मारे, साँप डाले, ज़हर पिलाया, देखिये उनके कार्य को, वह कैसे महान् थे। उसके उपकारों को मानों और सच्चा और सही रास्ता जो बताया उस पर चलो। जिससे आपको सुख मिले।

१७. श्री रामचन्द्र जी

राम के बारे में दो भ्राँन्तियाँ हैं एक तो यह कि राम भगवान् के अवतार थे। दूसरी यह कि आर्य लोग राम को नहीं मानते, दोनों ही निराधार हैं। भगवान् सब जगह सर्वव्यापक है। जब पहले ही यहाँ भगवान् था तो वह कहाँ से उतर कर आया। जो भगवान् एक मिनट यदि भूमि को हिला दे तो अरबों व्यक्ति खत्म हो सकते हैं। भला एक रावण को मारने के लिये जन्म-मरण के चक्र में पड़ेगा। ज़रा बुद्धि से सोचें। राम ने जो-जो कार्य किये यदि वह भगवान् थे तो उसकी शक्ति के आगे वह कुछ भी नहीं थे। बल्कि यह आरोप भी लगता है कि

इतना शक्तिशाली होकर इतने छोटे-छोटे कार्य किये। यदि मनुष्य थे तो बहुत प्रशंसनीय थे। जैसे बलशाली बाली और रावण को मारना, खण्ड-खण्ड भारत को एक सूत्र में बाँध कर मर्यादा पुरुषोत्तम बनना आदि-आदि। दूसरी भ्राँन्ति यह है के आर्य राम को हनुमान को नहीं मानते यह तो उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली बात है। वास्तव में तो आर्य ही राम को मानते हैं। जो लोग यह आरोप लगाते हैं, वह तो राम को मानते नहीं, बल्कि राम के नाम का दुरुपयोग करते हैं। जैसे राम के नाम से भीख माँगना, राम की मूर्ति के आगे प्रसाद रखवा कर आप उठा कर खाना। राम के आगे घण्टा बज़ाना राम के नाम पर माल तो अपने आप को भगत कहने वाले खाते रहे। जब राम पर विपत्ति आई तो आर्य लोगों ने ही राम को बचाया। जैसे निज़ाम हैदराबाद ने राम के मन्दिर तोड़े तो माल खाने वाले पुज़ारी भाग गये। आर्यसमाज ने आन्दोलन चलाया बलिदान दिये और निज़ाम के घुटने टिकवाये। जब जैनियों के आचार्य तुलसी जी ने अपनी पुस्तक में राम और माता सीता के चरित्र

पर लाँछन लगाये तो आर्यसमाज ने ही आन्दोलन चला कर यह किताब जब्त करवाई।

१८. श्री हनुमान जी

हनुमान जी बन्दर थे या वानर?- हनुमान जी का वानर वंश था। व्याकरण के विद्वान थे, शक्तिवान् महापुरुष थे। किन्तु अन्धविश्वासी धर्मान्ध भगतों ने उन्हें महापुरुष नहीं छोड़ा। जानवर बना कर ही दम लिया। बन्दर जैसा मुँह बना, पूँछ लगा नचाना शुरु कर दिया। हनुमान जी बन्दर नहीं वानर थे। वन में रहने वाली जाति के वानर थे। हनुमान को पूँछ नहीं थी उसकी पूछ थी। जब हनुमान जी किष्किन्धा नगरी से बाहर आकर राम से मिले थे तभी राम के मन भा गये थे और जब समुद्र पार करके लंका में जाकर सीता जी की खोज़ करके आये तो राम इतने प्रसन्न हुये कि अब जो भी काम राम करते हनुमान जी से पूछ कर करते थे। जैसे श्री अब्दुल कलाम राष्ट्रपति के राज में वाजपेयी जी की पूछ है। इसी तरह राम के राज्य में हनुमान की पूछ थी। क्योंकि वह राम के राज्य में प्रधान मन्त्री थे। हमारा और हमारी संतत्ति का विकास क्यों रुका? हम महापुरुषों को महापुरुष नहीं रहने देते

भगवान् या देवता बना देते हैं। और कहते हैं कि जब वह देवता थे तो हम उनका मुकाबला कैसे कर सकते हैं। यह धारणा हमारे मन मस्तिष्क में घर कर चुकी है। यदि हम हनुमान जैसे महापुरुष का जीवन चरित्र पढ़ पढ़ा कर अपनी सन्तान को ऐसा बनाने की कोशिश करते तो कितना अच्छा होता। चित्र पर प्रसाद, फूल चढ़ा कर इतिः श्री हो जाती है। क्या ही अच्छा हो कि हनुमान जी के चरित्र की पूजा हो। बेचारे भोले भाले लोग अन्ध विश्वास के कारण मारे-मारे फिरते हैं। जहाँ भी चालाक मनुष्य पत्थरों को तराश सँवार, शृंगार करके रख देता है यह बेचारे वहीं मारे-मारे फिरते हैं। खर्च करते हैं। स्वयं दुःख पाते हैं बच्चों को भी दुःख देते हैं, जैसे महेंदीपुर, सालासर, खाट्टू आदि जाकर पत्थर की मूर्ति पर माथा रगड़ते हैं जो किसी को कुछ नहीं दे सकती। इसलिये इन स्थानों पर जा जाकर क्यों दुःखी होते हो। अपनी बुद्धि से काम लेकर इन पाखण्डों से स्वयं बचें और अपने बच्चों को बचायें। और सच्चे ईश्वर को जान कर उसकी भक्ति करें, पूजा करें, जो निराकार, अजन्मा,

सर्वशक्तिमान् और न्यायकारी है और वह शरीरधारी नहीं है और ना ही कभी अवतार लेता है।

१९. श्री कृष्णचन्द्र जी

वैसे तो प्रायः सभी महापुरुषों का चरित्र हनन उनके अनुयायियों ने किया है। किन्तु जितना श्री कृष्ण जी के भक्तों ने कृष्ण जी का चरित्र हनन किया ऐसा किसी ने नहीं किया। योगी से भोगी बनाया। अपनी पत्नी रुक्मणी से हटा कर अपनी मामी (रायण की पत्नी) राधा के साथ कृष्ण को जोड़ा। सोहलह हज़ार एक सौ आठ गोपनियों का पति बताया। मक्खन चोर कह कर चोर, ज़ार, बदमाश बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। जैसे कहते हैं पनियाँ भरने कैसे जाऊँओ रास्ते में खेलैं नन्द के लाल। यानि रास्ते में कोई गुण्डा खड़ा हो। यह सभी बातें मनघड़न्त और मिथ्या हैं। देखिये श्री कृष्ण जी की महानता, श्री कृष्ण जी का विवाह राधा से नहीं रुक्मणी से हुआ था, जिसका नाम सत्यभामा भी था। ब्याह के बाद जब दोनों एकान्त कमरे में गये तो रुक्मणी ने इच्छा जाहिर की कि हे पतिदेव मैं आप जैसी सन्तान चाहती हूँ। श्री कृष्ण जी ने कहा कि मेरे जैसी सन्तान चाहती हो तो हमें बारह साल और तप

करना होगा। दोनों ने बारह साल के लिये प्रतिज्ञा कर ली और बारह साल तक ब्रह्मचर्य का पालन किया। बारह साल के बाद आपस में मिले फिर हुआ कृष्ण स्वरूप केवल एक ही पुत्र जिसका नाम था प्रद्युम्न कुमार जिसे प्रदमुनि भी कहते है। कौरव दल पाण्डवों से ज्यादा शक्तिशाली था फिर भी धर्म को विजय कराने के लिये कृष्ण जी की नीति ने पाण्डवों की जीत करवाई थी। ऐसे थे योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज। वह चरित्रहीन व्यभिचारी नहीं थे। जैसा कि पुराणों में लिख रक्खा है। वह गलत है

२०. अभिवादन का शब्द क्या है?

अभिवादन का शब्द ऐसा होना चाहिये जिसमें एक दूसरे का आपस में सम्मान हो। यानि मैं आपका सत्कार करता हूँ। यह है केवल और केवल नमस्ते में 'गुण' बाकी किसी भी अभिवादन के शब्द में ऐसा नहीं है। नमस्कार एक वचनीय है यह केवल परमात्मा को ही किया जाता है। 'राम-राम' आपने राम को तो याद किया किन्तु आने वाले का क्या सत्कार किया। 'जय हिन्द' आपने हिन्द की तो जय बोली आने वाले का क्या

सत्कार किया। 'सतश्रीकार' में आपने सत को श्रीकार बताया किन्तु आने वाले का क्या सत्कार किया। गुड मोरनिंग आपने सुबह तो अच्छी बताई किन्तु सत्कार क्या किया। यानि अभिवादन करने को असली शब्द तो केवल नमस्ते ही है जैसे बड़े को छोटा नमस्ते कहे और छोटे को बड़ा नमस्ते कहे। जिसका अर्थ है मैं आपका सत्कार करता हूँ, आप मेरा सत्कार करते हैं नमः-जमा-ते=मैं आपका आदर करता हूँ। मान्य करता हूँ। बड़ा छोटे के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देकर छोटे का सम्मान करता है और छोटा बड़े के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेता है। इस तरह दोनों का सम्मान हो गया।

२१. वानप्रस्थ यानि तीसरी अवस्था

इसका नाज़ायज़ फायदा उठा कर लोगों ने इसे हव्वा बना दिया। जैसे पीले या भगवें कपड़े पहनना, जटा रखना, नँगे पैरों चलना इनमें से कोई भी वानप्रस्थ के चिन्ह नहीं हैं। यह तो केवल लोग तीन फायदे उठाने के लिये करते हैं। १. इन कपड़ों में लोग पैर चुचकारते हैं। २. चौपड़ी रोटी मिलती हैं। ३. रेल में किराया बचता है। वास्तव में वानप्रस्थ अपने घर का दायित्त्व पूरा होने के बाद घर से निवृत होकर स्वयं अकेले या सपत्नी

मिल कर घर में स्थालीपाक (मीठे चावल) में घी डाल कर संस्कार विधि के चौदहवें संस्कार में लिखित ४३ आहुतियाँ देकर प्रतिज्ञा करें कि मैं (हम) आज के बाद तीन कार्य करेंगे। स्वाध्याय, सत्संग और साधना करते हुये वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे ऋषियों के ग्रन्थों को सुनायेंगे इसी को वान प्रस्थ कहते हैं और कुछ नहीं ना झूठा गुरु बनाना, ना कपड़े बदलना ना ही दिखावा करना। यह सब पाखण्ड हैं। पाखण्डों को छोड़ कर सच्चे ईश्वर भक्त वानप्रस्थी बनें और दूसरों को अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दें वैदिक परम्परा का प्रचार करें।

२२. रामायण

रामायण हमारा धर्म ग्रन्थ नहीं है। त्रेता युग में खण्ड-खण्ड देश को अखण्ड करने के लिये हमारे महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी द्वारा कूट नीति से लड़ा गया युद्ध का इतिहास है। जिसे हम धर्म युद्ध भी कह सकते हैं। इससे आप शिक्षा ले सकते हैं। दशरथ द्वारा बहु ब्याह की हानियाँ। राम द्वारा पिता का आदर, लक्ष्मण द्वारा भ्रात् भक्ति, सीता द्वारा पतिव्रता व्रत, भरत द्वारा त्याग ऐसी मिसाल धरती पर कहीं भी नहीं मिलेगी। रामायण का तोते की तरह पाठ मात्र

करने से कुछ नहीं मिलेगा। उसका अनुसरण स्वयं करें आने वाली सन्तति को भी प्रेरणा दें। राम के गुण अपनायें। राम जनेऊ पहनते थे, राम नित्य सन्ध्या हवन करते थे, श्रेष्ठ जनों की रक्षा करते थे, दुष्टों को दण्ड देते थे, न्याय करते थे।

२३. महाभारत

यह कोई धार्मिक ग्रन्थ नहीं है। त्रेता में रामायण का युद्ध जहाँ धर्म युद्ध था वहाँ महाभारत स्वार्थ युद्ध था। रामायण युद्ध जहाँ उत्थान के लिये था वहाँ महाभारत युद्ध हमारे पतन का युद्ध था। रामकाल में जहाँ भाई-भाई आपस में कुर्सी को गेंद की तरह बगा रहे थे वहाँ महाभारत में कुर्सी के लिये भाई-भाई एक दूसरे के खून के प्यासे थे। राम काल में जहाँ भाई की पत्नी को माता का सम्मान दिया गया था, वहाँ महाभारत में भाई की पत्नी को भरी सभा में नँगी जाँघ पर बिठाने को कहा गया था। महाभारत के युद्ध में देश के विद्वान्, बलवान् मारे गये। देश धीरे-धीरे पतन की ओर जाने लगा। छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटने लगा जिसका नतीज़ा हुआ, लगभग सात सौ साल मुसलमानों के और दो सौ साल तक अग्रेंज़ो के गुलाम रहे। महाभारत का युद्ध हमारे देश के लिये दुर्भाग्य था। वह दुर्भाग्य

भाग्य में जब बदला जब परमपिता परमात्मा ने एक महान् आत्मा महर्षि देव दयानन्द को भेजा और उन्होंने सन् अठारह सौ पचहत्तर में स्वतन्त्रता का नारा हमें सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा दिया।

२४. गीता

जिस समय युद्ध का बिगुल (शँख) बज चुका हो दोनों सेनायें आमने सामने एक दूसरे को पल भर में मिटाने को तैयार हों। पाण्डवों का शक्तिशाली दुश्मन दुर्योधन धर्म अधर्म किसी भी तरह युद्ध जीतने को आतुर हो। ऐसे भयानक समय में राजनीति के चतुर, सकुशल श्री कृष्ण जी यदि छः घन्टे का आत्मा-परमात्मा का उपदेश अर्जुन को देने बैठ जाये भला कौन बुद्धिमान् व्यक्ति इस बात को मानेगा। केवल मात्र इतना ही हुआ था कि अपनों को देख मोह हो गया था कि मैं इन अपनों को राज्य के लिये मारूँगा। बस श्री कृष्ण जी ने समय को भाँपते हुये इतना ही कहा कि यह नाती जब भी तो थे द्रोपदी को नँगी जाँघ पर दुर्योधन बिठा रहा था। बस इतना कहना था कि अर्जुन को यह बात तीर की तरह लगी आँखें लाल हो गई गाण्डीव धनुष को उठा लिया केवल मात्र पन्द्रह मिनट

से ज्यादा गीता का उपदेश नहीं था। यह इतना बड़ा पोथा तो श्री कृष्ण जी के नाम से दूसरों की पुराणों की तरह देन है। महाभारतकार ने महाभारत के अन्दर बाद में विस्तार किया है। यह सत्य बात है, विचार करके देखें बुद्धि से सोचें।

२५. पुराण

सर्वप्रथम देश में जैनियों ने २४ तीर्थंकर, १८ सार बना कर मूर्ति पूजा शुरू की जब उनके यहाँ चढ़ावा चढ़ने लगा दूसरों का भी जी ललचाया उनकी नकल करके २४ अवतार १८ पुराण बनाये गये, वैसे तो ब्राह्मण ग्रन्थों को भी पुराण कहा गया है जो कि हमारे आर्ष मान्य ग्रन्थ हैं किन्तु कुछ धूर्त स्वार्थियों ने परधन हरण हेतु जैनियों के समानान्तर श्री वेदव्यास जी के नाम से १८ पुराणों की रचना की जिनमें सिवाय कपोल कल्पित गपोड़ों के कोई भी बुद्धि की बात नहीं है जो गाँठ के पूरे अकल के माड़े लोग हैं वह इन पुराणों के गपोड़ों से भयभीत व प्रभावित होकर खूब इन पुराणों की

कथा करने वालों के पँजों में फँसते हैं इन अठारह में से दो पुराणों का इन गाँठ के पूरे अकल के अन्धों पर ज्यादा प्रभाव है गरुड़ पुराण व श्रीमद्भागवत पुराण। इन पुराणों को पढ़ना छोड़ कर हमें सच्चे ग्रन्थों को ही पढ़ना चाहिये जिनसे हमें सच्चा ज्ञान मिल सके। वो हैं चार वेद चार, छः शास्त्र, ग्यारह उपनिषदें, सत्यार्थप्रकाश आदि।

२६. कुरान

आज से लगभग चौहद १४०० सौ साल पहले ईस्लाम धर्म को मौहम्मद ने चलाया था इस ग्रन्थ का नाम है कुरान इस ग्रन्थ में (६६६६) छः हज़ार छः सौ छियासठ आयतें हैं। इस ईस्लाम धर्म में लगभग एक हज़ार आयतें आपस में घृणा फ़ैलाने की ही हैं जो कुरान को नहीं मानता वह काफ़िर है उन्हें या तो मुस्लमान बना लो यदि नहीं तो उसे जान से मार डालो मानव के प्रति द्वेष इतनी घृणा किसी भी और ग्रन्थ में नहीं है यही कारण है कि आज जहाँ भी आंतक फ़ैला हुआ है वहाँ शान्ति कभी नहीं हो सकती।

२७. बाईबल

यह पुस्तक ईसाई मज़हब की धर्म पुस्तक है जो कि लगभग दो हज़ार अठारह वर्ष पूर्व ईसा मसीह द्वारा लिखी गई थी। ईसाईयों का मानना है कि ईसा मसीह कुँवारी मरियम के पेट से पैदा हुआ था और वह भगवान् का इकलौता बेटा था और ईसा मसीह की सिफ़ारिश के बिना भगवान् किसी का कोई काम नहीं करता। यदि तुम्हें ईश्वर से कुछ माँगना है तो ईसामसीह पर ईमान लाओ चाहे कितने ही पाप क्यों ना किये हों सब माफ़ हो जायेंगे। दूसरी ओर ये यह भी कहते हैं कि ईसा मसीह दुनियाँ के सभी पाप लेकर फाँसी पर चढ़ गया। यानि पाप बचे ही नहीं। आज विश्व में ईसाई विज्ञान में सबसे आगे हैं फिर भी ना जाने वे धर्मान्ध विज्ञान के विरूद्ध बातें क्यों स्वीकार कर लेते हैं। जैसे कुँवारी मरियम को बिना बाप के बच्चा हुआ। ईसा मसीह भगवान् का इकलौता बेटा था दुनियाँ के सारे पाप लेकर फाँसी पर चढ़ गया। बाईबल में अनेकों ना मानने वाली विज्ञान व तर्क के विरुद्ध बातें भरी पड़ी हैं और यह 'वैज्ञानिक' आँखें बन्द करके उसी बाईबल को मान रहे हैं यह बहुत ही दुःख की बात है।

२८. सूर्य ग्रहण क्या है?

जन मानस में एक भ्राँन्ति बैठी हुई है कि सूर्य और चन्द्रमा से राहू, केतु कर्ज़ा माँगते हैं इसी लिये राहू, केतु इन्हें पीटते हैं। उनके पँजे से छुटाने के लिये यानि सूर्य चन्द्र का कर्ज़ा चुकाने के लिये उस समय लोग दान करते हैं। यह कपोल कल्पित बातें हैं। यह बातें उन लोगों द्वारा घड़ी गई हैं जो उस समय का नाज़ायज़ फायदा उठा कर दान लेते हैं। भोली जनता उनके इस जाल में आराम से फँस जाती है। वास्तविकता तो यह है। जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथ्वी आ जाती है तो चन्द्रमा पर छाया पड़ती है उसी का नाम ग्रहण है। इसके सिवाय और कुछ नहीं होता। यदि सूर्य का पूर्ण ग्रहण हो सूर्य की उष्णता ना होने से गर्भवती महिलाओं पर कुप्रभाव अवश्य पड़ सकता है। इसलिये गर्भवती को ग्रहण नहीं देखना चाहिये।

२९. मुहूर्त

जिस दिन घर परिवार में प्रसन्नता हो अति सर्दी अति गर्मी अति बारिश ना हो अवकाश का दिन हो सभी शुभ कार्यों का वही शुभ दिन है इन सब बातों का वर्णन पत्रे में कहाँ मिलेगा। यह तो आपको स्वयं ही देख कर करना चाहिये। लोग मकान आदि के मुहूर्त पर लोगों से रुपये लेते हैं क्या इससे मकान की लागत पूरी हो जायेगी या रोटियों के बिल की अदायगी है। यह कोई अच्छी बात नहीं है। कुछ लालची प्रवृति के लोग इसके बहाने अपने ससुरालियों को भी खूब लूटते हैं। पर सब गलत रिवाज़ चला दिये हैं, इन्हें छोड़ना चाहिये।

३०. व्रत उपवास

उप+वास=उपवास कहते हैं नज़दीक पास बैठना यानि ईश्वर के नज़दीक लगने का नाम ही उपवास है भूखे मरने का नाम नहीं। व्रत नाम है प्रतिज्ञा का यानि मैंनें इस काम को करने या ना करने का व्रत लिया। भूखे मरने का नाम व्रत नहीं है हम यदि बुद्धि से सोचें जिस देवता का आप व्रत कर रहे हैं यदि वह आपका हित चिंतक है तो आपको भूखे मार कर राजी क्यों होगा। यदि वह राज़ी होता है तो वह हमारा हित चिन्तक नहीं है।

वह देवता तो हमारे माता-पिता हुये। कोई भी माँ अपने पुत्र को भूखा मार कर खुश नहीं होती बल्कि नाराज़ होती है। वह देवता भी आपको भूखा देख कर नाराज़ ही होगा। खुश कैसे हो सकता है। मैंने व्रत लिया मैं सत्य बोलूँगा, मैं सत्य का व्यवहार करूँगा, मैं किसी की निन्दा चुगली नहीं करूँगा, किसी के साथ धोखा नहीं करूँगा, मैं किसी को गाली नहीं दूँगा आदि इनका नाम व्रत है इनको धारण करना चाहिये।

३१. मूर्ति की असली पूजा

मूर्ति दो प्रकार की हैं एक जीवित दूसरी मृतक जीवित दादा-दादी, नाना-नानी, मात-पिता, आचार्य अतिथि यह सब जीवित मूर्तियाँ हैं। इनकी सेवा करना अच्छी आज्ञा मानना ही असली पूजा है। दूसरी मृत हमारे महापुरुषों या माता-पिता आदि की मूर्तियों को उचित स्थान पर लगाना। झाड़ पौंछ कर साफ़ रखना और आने वाली सन्तत्ति को बताना कि देखो यह हमारे महापुरुष हुये हैं। इनके चित्र को देखो और चरित्र को पढ़कर इन जैसे महान् बनने का प्रयत्न करो यही असली मूर्ति पूजा है। ऐसा ना करके उल्टा उन मूर्तियों पर फूल चढ़ाना, हाथ

जोड़ना, मूंधे पड़ना, चोखट पर नाक रगड़ना, कान पकड़ना, छाती में हाथ मारना आदि इन कार्यों को मूर्ति देखती नहीं क्योंकि मूर्ति तो जड़ है वह आपको क्या आशीर्वाद देगी। और यदि उन्हें भगवान् मान लिया तो आप उन जैसे बनने का प्रयत्न ना करोगे ना ही सन्तान को कहोगे। इन्सान भगवान् तो बन नहीं सकता इन्सान उनको आपने छोड़ा नहीं। घर में महापुरुषों के चित्र तो लगाने ही चाहियें परन्तु उनकी शकल बिगाड़ कर नहीं। जैसे शिव की गणेश की, हनुमान की शकल बिगाड़ रक्खी है। शिव को साँप लपेट कर, गणेश को हाथी का शिर लगा कर, हनुमान को पूँछ लगा बन्दर जैसा रूप बनाकर इनकी मूर्ति बनाकर उसको भोग लगाना, उनकी आरती उतारना व माला पहनाना ठीक नहीं। उनके अच्छे गुणों को धारण करना ही असली पूजा है।

३२. जन्मपत्री

जन्मपत्री नहीं इसे तो शोक पत्री कहना चाहिये। लोग भोले-भाले व्यक्तियों को फँसाने के लिये ऐसा करते हैं। पहले अच्छी-अच्छी बातें लिख कर बाद में कुछ डरावनी बातें लिख कर शोक में डाल उनका धन लूटते हैं। भाग्य तो कर्म के आधीन है। बच्चा जैसा-जैसा कर्म करेगा वैसा उसका भाग्य बनता चला जायेगा। ज्योतिष एक विद्या है जिसमें गणित

विद्या सही है। जैसे सूर्य, चन्द्र आदि की गति अनुसार ग्रहणों का हिसाब का पता लगाना किन्तु जो फलित विद्या आदि भविष्य बताने का ढ़ोंग करते हैं वह केवल बुद्धिहीन लोगों को लूटना मात्र है। समझदार व्यक्ति को चाहिये उन पर विश्वास बिल्कुल ना करें। दूसरों का भाग्य बताने वाले चालिस-चालिस साल तक गन्दे नाले के ऊपर बैठे रहते हैं सबका भाग्य देख देते हैं किन्तु उन्हें अपना भाग्य आज तक नहीं देखना आया।

३३. पितरों के श्राद्ध

अपने जीवित दादा-दादी, सास-ससुर, माता-पिता, आचार्य अतिथि की श्रद्धा के साथ सेवा करना ही श्राद्ध है। यह श्राद्ध तो करने ही चाहियें इन जीवितों को ही पितर कहते हैं। जो पिता और पितामह के तुल्य हैं वही पितर हैं। मरे हुये पितर नहीं हो सकते। मरने के बाद तो तुरन्त यह जीव उपनिषदों के अनुसार अपनी दूसरी माँ के पेट में चला जाता है। आप उसे कुछ भी नहीं खिला सकते। उसे तो वही मिलेगा जो उसकी नई माँ खायेगी। जो लोग जीवित पिता से दँगम-दँगा मृत पिता को पहुँचाये गंगा। जीवित पिता को घूँसे और लात, मृत पिता को

दाल और भात देते हैं यह उचित नहीं है। सच्चा श्राद्ध ही किया करो, वह है जीवितों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना। अपना कर्त्तव्य समझ कर सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है। मरने के बाद हम नहीं जानते कि जीव को कौन सी योनि मिली है और कहाँ है और क्या खायेगा? चारज़ डाकिया है क्या जो सबके अते पते रखता हो थोड़ा सा बुद्धि से सोच कर तो देखो।

३४. जाति या वर्ण

असली जाति को भूल कर हम बनियाँ, बामण, जाट, गूजर, चमार, धानक आदि को ही जाति मान बैठे। जबकि यह जातियाँ हैं ही नहीं। महाभारत के युद्ध से पहले वर्तमान जातियों में से कोई भी जाति नहीं थी केवल वर्ण व्यवस्था थी। ज्ञान देने वाले ज्ञान का उपयोग करने वाले को ब्राह्मण कहा जाता था। (बामण नहीं) देश की, समाज की, श्रेष्ठ व्यक्ति की रक्षा करने और अन्यायी, कुकर्मी, दुष्टों को दण्ड देने वाले को क्षत्रिय कहा जाता था। देश के काम आने वाली वस्तुओं के अभाव को मिटाने वालों को वैश्य कहा जाता था। इन तीनों वर्णों के कार्यों में लगन वा निष्ठा से कार्य करने वाले को (जो पढ़ाने से भी ना पढ़ सके) शूद्र कहा जाता था। जातियाँ जो कि परमात्मा

ने बनाई वह ऐसे हैं। मनुष्य जाति, स्त्री जाति, गौ पशु, कीट, पतंगा, मक्खी, मच्छर आदि जाति बहुत से आलसी लोग भाग्य के इन्तज़ार में भाग्य के सहारे बैठे रहते हैं कहते हैं कि मिलना तो वही है जो लिखा है। ऐसे कर्महीन लोग कभी भी जीवन भर तरक्की नहीं कर सकते। जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों के आधार पर आपको अच्छे या बुरे घर में मनुष्य का जन्म परमात्मा ने देकर तुम्हें कर्म के आधार पर भाग्य बनाने के लिये स्वतन्त्र कर दिया है। आप जैसा चाहें पिछले कर्मों का भुगतान करते हुये आगे का भाग्य भी बना सकते हैं। अच्छे कर्म करके अच्छा, बुरे कर्म करके बुरा भाग्य बनाना मनुष्य के अपने हाथ में है।

३५. त्यौहार

भिन्न-भिन्न कारणों से भिन्न-भिन्न त्यौहार बने हैं। तीज़, श्रावणी, कृष्ण जन्माष्टमी, दशहरा, दिवाली, मकरसक्रान्ति, होली, बसन्तपँचमी, रामनौमी आदि-आदि। मानव जाति को चार भागों में बाँटा गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इनके सरकारी नाम यह हैं। फस्ट क्लास आफ़िसर, सैकिण्ड क्लास आफ़िसर, थर्ड क्लास आफ़िसर वा फोर्थ क्लास

कर्मचारी। ब्राह्मणों का त्यौहार है श्रावणी। रक्षाबन्धन तो हमारी मातृ शक्ति को कायर बनाने का एक षड्यन्त्र है। बहन की रक्षा भाई करेगा। यानि वह स्वयं अपनी रक्षा कभी नहीं कर सकती। यह कह-कह कर इनका मनोबल गिराया जा रहा है। यह त्यौहार तो ब्राह्मणों का है। वेद पढ़ने वा पढ़ाने का है। क्षत्रियों का त्यौहार दशहरा है। उस दिन छोटे बच्चे भी तीर कमान लेकर खड़े हो जाते हैं क्षत्रिय लोग बरसात की नमी के बाद हथियारों को साफ़ करते थे। यह गलत फ़हमी है कि उसी दिन रावण मरा था। रावण तो चैत्र मास में मरा था, दशहरे के बाद (चौमासे के बाद) तो सीता की खोज़ शुरू हुई थी। वैश्यों का त्यौहार है दिवाली बरसात के बाद आवागमन शुरू हो जाता था व्यापारी अपने काम की शुरूआत दिवाली से करते थे यह कहना गलत है कि श्रीराम इसी दिन अयोध्या आये थे। यह तो इतिहास को ना समझने वालों की भूल है। बरसात के बाद सीता की खोज़ शुरू हुई। सुलह की कोशिशें हुई। सेतू बनने में समय लगा। चैत्र में जाकर राम अयोध्या आये क्योंकि वनवास भी चैत्र में हुआ था। वे ना एक दिन पहले आ सकते थे ना एक

दिन बाद। क्योंकि पहले आते तो बनवास टूट जाता, बाद में आते तो भरत आत्महत्या कर लेता। बुद्धिपूर्वक विचार करो ठीक बात को मानों गलत बातों को छोड़ो।

३६. आर्यसमाज

आर्यसमाज कोई धर्म नहीं है इसकी स्थापना तो केवल एक सौ तेतालिस वर्ष पहले ही हुई थी। हमारा धर्म तो (एक अरब, छियानवे करोड़, आठ लाख, तरेपन हज़ार, एक सौ उन्नीस) वर्षों से चला आ रहा है। जब हम महाभारत के युद्ध के कारण अपने वैदिक धर्म को भूल गये थे। महर्षि दयानन्द जी ने सन् १८७५ में वैदिक धर्म का डंका बजाया और उसकी रक्षा के लिये आर्य समाज की स्थापना की। आर्यसमाज धर्म नहीं वैदिक धर्म का चौकीदार है। महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी ना कि आर्यसमाज मन्दिरों की? किन्तु अब कुछ स्वार्थी, पाखण्डी अधिकारी वा पुरोहित आ घुसे हैं जिन्होंने आर्यसमाज को मन्दिरों में परिवर्तित कर दिया है और वहाँ पर भी मरे हुओं का माल खाना, श्राद्ध खाना आदि-आदि शुरू हो गया है। गुम्बज़ बना, कलश चढ़ा कर मन्दिर का

रूप भी देना शुरू कर दिया है। जबकि महर्षि दयानन्द जी ने केवल यज्ञ वेदी पर छाया बनाने को ही लिखा है। इसलिये आर्य जनों को ऋषि के आदेश को मानना चाहिये।

३७. सनातन धर्म

सनातन धर्म के मायने पुराना यानि यह तो कहा कि हमारा धर्म पुराना है। किन्तु इन्हें धर्म के नाम का पता ही नहीं उसका क्या नाम है। आज से एक सौ चालिस साल पहले महर्षि देव दयानन्द जी ने (हम महाभारत युद्ध के मारे हुये गुलामी में जकड़े हुये अपने धर्म को ही भूल गये थे)। ऐसे समय में हमें अपने धर्म की याद वा पहचान करवाई और वैदिक धर्म का डंका बजने लगा। कुछ लोगों के पेट में ऐंठन होने लगी। जिन लोगों की दयानन्द के कारण रोटी रोज़ी खुस चुकी थी, वे इकट्ठे होने लगे और उन्होंने वैदिक धर्म के मुकाबले में सनातन धर्म के इसमें 'प्रमाण' आपको देश के कोने-कोने में हनुमान मन्दिर, शिव मन्दिर, राम मन्दिर, कृष्ण मन्दिर, पाँच सौ वर्ष एक हज़ार वर्ष पुराने मिलेंगे किन्तु सनातन धर्म मन्दिर के नाम से कोई

सौ साल से पुराना नहीं मिलेगा। धर्म कई नहीं होते, केवल एक ही होता है। और वह है वैदिक 'धर्म' अन्य सभी पन्थ हैं धर्म नहीं। पृथ्वी के सभी मनुष्यों का धर्म एक मात्र वैदिक धर्म है। बाकी सब पन्थ हैं। आओ सब मिल कर एक वैदिक वेदों का धर्म जो सबसे पुराना है। उस को सही रूप में जान कर इसे ही मानें जिसको मानकर हम सब सुखी हो सकते हैं।

३८. जैन

जितने भी मतमतान्तर हैं जैन पन्थ के बाद के हैं। (केवल वैदिक धर्म को छोड़ कर) क्योंकि वैदिक धर्म तो आदि सृष्टि से चला आ रहा है। लगभग छब्बीस सौ साल पूर्व यह जैन मत चला था। इसके अठारह धर्म ग्रन्थ सार हैं चौबीस तीर्थंकर हैं। इनके मत में ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है। मनुष्य ही ईश्वर बन जाता है इनके ग्रन्थों में तीन अच्छाइयों को छोड़ कर बाकी सब नाना प्रकार के कपोल कल्पित गपोड़े भरे पड़े हैं जिन्हें कोई बुद्धिमान् व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता। (तीन अच्छाइयाँ) एक छान कर पानी पीना दूसरे जीव मात्र पर दया करना तीसरे दिन छिपने से पूर्व भोजन करना। परन्तु आजकल

जो नाम के जैनी हैं वे नशा करते हैं, माँस भी खाते हैं, जुआ भी खेलते हैं। रात को भोजन भी करते हैं।

३९. कानून

खास करके भारत में कानून केवल कमज़ोरों के लिये बना है। जैसे मकड़ी जाल बुनती है। और उसमें फँसने वाले छोटे-छोटे जानवरों को खाती रहती है जब कभी बड़ा मकड़ा जाल में पड़ता है तो जाल को फाड़ कर मकड़ी को भी खा जाता है। इसी तरह इस कानून के शिकँजे में छोटे-छोटे कमज़ोर पिसते ही रहते हैं। जब भी बड़ा राजनैतिक मकड़ा पड़ता है इस कानून रूपी जाल को छिन्न-भिन्न कर देता है इसलिये कमज़ोर को हमेशा इस कानून रूपी जाल से बचना चाहिये। इस देश में तोप काण्ड हुआ, शेयर काण्ड हुआ, हवाला काण्ड हुआ, तहलका काण्ड हुआ, चारा काण्ड हुआ, दवा काण्ड हुआ, टी.वी. घोटाला हुआ, रिश्वत काण्ड हुआ, पैट्रोल पम्प काण्ड हुआ गिनती होना ही मुश्किल हो गया है। इतने घोटाले हुये ऐसा नहीं कि सिर्फ़ कांग्रेस ने ही किये हों भाजपा उनसे भी एक क़दम आगे रही है। घोटालों में शामिल लोगों को कांग्रेस ने कम भाजपा ने ज्यादा छाती से लगाया है। जैसे हिमाचल के सुखराम को, मद्रास की अम्मा को,

अमरजैंसी के हीरो बन्सीलाल को। आप देखें घोटालों में शामिल किसी भी एक नेता का कुछ भी बाल बाँका हुआ हो सभी बरी हो गये या हो जायेंगे। इनकी जगह यदि कोई कमज़ोर व्यक्ति होता तो जेल में ही जीवन समाप्त होता। जैसे जयललिता, सुखराम, अडवानी, नरसिंहा राव, बूटा सिंह सभी खिलाड़ी जिन पर केस चल रहे थे सभी बरी हो गये हैं। सिर्फ़ जनता को खुश करने के लिये दिखावा कर देते हैं। जेल भेज देते हैं आयोग बना देते हैं। घोटालों पर पर्दा डालने के लिये। जैसे राजीव गाँधी तोप काण्ड पर पर्दा डालने के लिये समिति बनाई थी। जब कुछ बिगड़ना ही नहीं पचास करोड़ का घोटाला किया तो चार करोड़ लग भी गये तो क्या टोटे का सौदा है फिर क्यों ना होंगे घोटाले। घोटालों के बाद आयोग बनाकर करोड़ों रुपयों का बोझ और खामखाह बिचारी जनता पर डाल देते हैं। ताकि जनता एक बार खुश हो जाये, तुलसी जी ने ठीक ही लिखा है कि सामर्थ को नहीं दोष गोसाँई।

४०. हिन्दू

हम बहुत बड़ी भ्राँन्ति में हैं मुसलमानों द्वारा दिया गया हिन्दू शब्द से हम ऐसे चिपके बैठे हैं जैसे मरे हुये बच्चे से

मोहवश बन्दरी चिपकी रहती है। जैसे पहले शिक्षा का विस्तार नहीं था। एक गाँव में दो चार श्रेणी पढ़ा लिखा केवल बनियाँ होता था। किसी गाँव में अंग्रेज अधिकारी आ गया उससे बात करने में जब कोई भी समर्थ नहीं हुआ तो बनिये को बुलाया गया। बनियाँ भी बिचारा क्या जाने अंग्रेजी को अंग्रेज ने उस बनिये को कहा डैमफुल। सारे गाँव के लोगों ने ताली पीट दी और उसी दिन से सारे गाँव वाले बनिये को डैमफुल कहने लगे। जब उसका लड़का बाहर से पढ़ लिख कर आया तो लोगों को अपने पिता जी को डैमफुल (बेवकूफ) कहते हुये सुना तो पिता जी से पूछा पिता जी यह क्या हो रहा है। पिता ने बड़े गर्व के साथ कहा कि बेटा यह पदवी तो मुझे एक अंग्रेज़ ने दी थी। बेटे ने माथे पर हाथ मार कर कहा कि पिता जी इसका अर्थ है बेवकूफ। इसी तरह मुसलमानों ने हमें उर्दू में काफ़िर कहना शुरू किया हम उर्दू को समझते थे चिढ़ने लगे। किन्तु मुसलमानों ने हमें कहना तो काफ़िर ही था क्योंकि उनका कुरान, कुरान पर ना चलने वालों को काफ़िर कहता है। फिर उन्होंने होशियारी चली फारसी से जिसे हम नहीं समझते थे उसका शब्द हिन्दू ढूँढ़कर लाये और हमें हिन्दू कहना शुरू

कर दिया। हिन्दू का अर्थ भी वही काफ़िर है। उपरोक्त बनिये की तरह खुश हो गये। फिर भारत के सपूत दयानन्द मथुरा से पढ़कर आये तो उन्होंने हमें बताया कि हे भारत के लोगो हिन्दू का अर्थ काला काफ़िर चोर होता है। हम तो आर्य थे, आर्य हैं, आर्य रहेंगे। इसलिये हमें आर्य शब्द से चिढ़ना नहीं चाहिये, अपितु हमें आर्य कहने और कहलवाने में खुशी होनी चाहिये।

४१. नशा

नशे कई प्रकार के होते हैं धार्मिक, उन्मादी, मादक द्रव्यों का नशा। देश का नशा जैसे भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, राज गुरु, चन्द्रशेखर आदि को था वे देश पर न्यौछावर हो गये। आज के उग्रवादियों को इस्लाम के धर्मान्धों ने इस्लाम के नशे में अन्धा बना रक्खा है। वह इस नशे में सोचने की शक्ति भी खो बैठे हैं। अपना अमूल्य मानव जीवन भाँग के भाड़े खो रहे हैं वहाँ दूसरों का भी जीवन खो रहे हैं। शराब के नशे में लोग अँटशँट बकते हैं। मनमानी करते हैं। दूसरे लोग यह कह कर माफ़ कर देते हैं कि यार इसने तो पी रक्खी है। शराबी व्यक्ति को सब कुछ पता होता है वह जो कुछ भी करता है जान कर

करता है। शराब कुछ नहीं करवाती। शराबी व्यक्ति कभी भी अपने से तगड़े आदमी को कुछ नहीं कहता। बल्कि उसके पैर पकड़ता है। यदि कमज़ोर मिल जाये तो चढ़ बैठता है। कहीं बारात में जाता है वहाँ सबकी बहन-बेटियों के साथ बकवास करता है। यदि उसकी बहन वहाँ ब्याही हुई हो तो उसे क्यों नहीं गालियाँ देता बल्कि उसे पाँच रुपये देता है। शराब और भूतों की 'दवाई' जूते हैं, जूते लगते ही रफ़ूचक्कर हो जाते हैं।

४२. भूत को समझें

बड़े बूढ़ों ने भूतों की कहानियाँ सुना-सुना कर हमें डराया है। सभी यही कहते हैं कि हमने सुना है, देखा किसी ने नहीं। भूतों की कहानियाँ सुना-सुना कर बच्चों को कायर बनाते रहते हैं। इसी भय के कारण कितने लोगों की कीमती जान भी चली जाती है। भूत निकालने वाले चालाक ओझों की चाँदी बन जाती है उन्हें खूब लूटते हैं। कभी-कभी तो वह जान भी ले लेते हैं। वास्तविकता क्या है भूत, भविष्य, वर्तमान यह तीन काल हैं जो व्यक्ति मर गया वह भूत नहीं बना, भूतकाल में चला गया। जैसे भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, भूतपूर्व राष्ट्रपति बस इसी शब्द से ही लोगों को भ्राँन्ति होते-होते भूत खड़ा कर

दिया गया। और कोई भूत आदि नहीं होता। हे बहनों हे भाइयो इन पाखण्डों से और इन ओझों से बचो और अपनी सन्तान को भी इन झूठी कहानियों से बचाओ और सुखी रहो।

४३. क्या गंगा पाप काटती है?

गंगा एक पानी की नदी है लोग कहते हैं गंगा में नहाने से सारे पाप कट जाते हैं (क्योंकि कपोल कल्पित पुराण ऐसा कहता है) यदि ऐसा ही है तो गंगा लोगों के सारे पाप लेकर हिन्द महासागर में डाल देती है। हिन्द महासागर उन पापों को बादलों को दे देता है। बादल वह सारे पाप हमारे घरों पर ही बरसा जाता है। यानी जो पाप तुम गंगा में डालकर आये थे फिर तुम्हारे को ही चिपट गये। ध्यान रहे जैसा कर्म तुम करोगे उसका फल आपको अवश्य ही भुगतना होगा। कितने ही गंगा नहा लो बामण जिमा लो बन्दरों को चूरमा खिला लो। इन सबका फल आपको अलग से मिलेगा। बुरे कर्मों का फल बुरा अच्छे कर्मों का अच्छा फल तो आपको मिल कर ही रहेगा। फिर क्यों किराया लगा कर समय बर्बाद करके यातायात में भीड़ कर रहे हो। इसलिये घर बैठ कर ही ईश्वर की भक्ति किया करो जिसका मुख्य नाम ओ३म् है और पाप कर्मों से दूर रहो।

४४. टोणे ताबीज़

टोणे ताबीज़ कई ओझे नाले का ताबीज़ बनाते हैं कई कागज़ का बनाते हैं और ताबीज़ में डाल देते हैं और गले में या बाजू में बन्धवा देते हैं। लोग अन्धविश्वास में फँस कर अपना धन ठगाते हैं। इनसे किसी का कुछ भी भला या बुरा होने वाला नहीं है। कई इन टोणों से बहुत डरते हैं। इन टोणों को लेकर झगड़े भी होते हैं। समझदारी से काम लेकर डरा न करें। यदि तुम्हारे ऊपर कोई टोणा करे तो लड़ें नहीं उसे खुली छूट दें कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं, ईश्वर पर विश्वास रक्खें। हाँ एक बात का ध्यान जरूर रक्खें इनके हाथ से किसी प्रकार का भी प्रसाद ना लें' ना ही खायें यदि ले लिया है तो कुत्ते को खिला दें।

४५. झाड़ा

भारी से मोर की पँख से, चिमटे से जो ओझे बच्चों को झाड़ा लगाते हैं वह कुछ नहीं जानते ना ही उनसे कोई फ़ायदा होता है। लोग झाड़े भी लगवाते हैं डाक्टर से इलाज़ भी करवाते हैं फायदा तो डाक्टर की दवाई करती है नाम ओझों का होता है। मूर्ख समझते हैं झाड़े ने फ़ायदा किया है। लोग

इतने मूर्ख हैं कि इनके चक्कर में फँसे ही रहते हैं, अपनी बुद्धि से कुछ सोचते ही नहीं, ऐ भोले भाइयो तथा बहनों-बेटियो इन ओझों के चक्कर से बचो और सुखी रहो।

४६. फ़ेटूड़ा

पहले महिलायें तालाब से सिर पर पानी लाती थी रास्ते में वह शाम के समय भेड़ की ऊन सुबह आक्सीज़न लेती है शाम को छोड़ती है माँ का शरीर सुडौल होने के कारण उसका कुछ बिगड़ता नहीं किन्तु वह महिला अपनी दूधी को बिना साफ़ करे ही बच्चों को दूध पिला देती थी। बच्चे का शरीर कोमल होने के कारण उल्टी, दस्त, बुखार हो जाता था। असलियत को ना समझ कर कहते थे कि बच्चे को फ़ेटुड़ा हो गया। दवाई ना करके झाड़े, झपटे करते हैं। यह भी एक अनसमझी की भ्राँन्ति है। यदि बच्चे को उल्टी, दस्त, बुखार आदि हो जाये तो तुरन्त दवाई दिलवानी चाहिये।

४७. पीर

मरे हुये मुसलमान को पीर कहते हैं। क्या कारण है कि हिन्दू कोई पीर नहीं बनता। मुसलमान ही क्यों? फिर ज्यादातर

हिन्दू ही इन्हें पूजते हैं। जब तक वह मुसलमान जिन्दा था उसे गौ हत्यारा कहते रहे। मरने के बाद उन हिन्दुओं का पूज्य बन जाता है। उस गौ हत्यारे की कब्र पर मूँधे होकर माथा टेकते हैं। मुसलमान हमेशा हिन्दुओं का ही माल खाता है। धापा मुसलमान अमीर, भूखा फ़कीर, मरा हुआ पीर, खाना माल हिन्दुओं का बुद्धि से काम लेकर उनसे डरना छोड़ें।

४८. सती

कोई धर्मान्ध महिला अपने मृत पति के साथ जिन्दा जल जाती है लोग उसे सती कहते हैं। क्या कारण है के मृत पत्नी का कोई भी पति सता क्यों नहीं होता। इन बेचारी अबलाओं को क्यों जिन्दा जलाया जाता है। यह अत्याचार है। उस धर्मान्ध भोली भाली महिला को बचाने की पूरी-पूरी कोशिश करनी चाहिये। यदि दुर्भाग्य से कहीं पर ऐसी घटना घट भी जाती है तो उसकी पूजा, उसकी महिमा, उसका प्रचार तो कतई नहीं करना चाहिये। जिसने अपना अमूल्य मानव जीवन भाँग के भाड़े गँवा दिया उसकी प्रशंसा क्या जितनी निन्दा की जाये उतनी थोड़ी है। जो अपने अमूल्य जीवन को नहीं बचा सकी वह तुम्हें कहाँ से बेटे देगी।

४९. मुण्डन (बच्चों के बाल उतरवाना)

गर्भ के बाल बहुत हानिकारक होते हैं उसे चोटी समेत उस्तरे से (कैंची या मशीन से नहीं) काट देने चाहियें। कम से कम तीन बार तो बाल उस्तरे से ही कटवायें ये बाल एक साल से पहले ना कटवायें क्योंकि सिर की तीन हड्डियाँ अलग-अलग होती हैं एक साल से पहले आपस में मिल नहीं पाती। पहले उस्तरा फिराने से बच्चे को हानि हो सकती है। ज्यादा से ज्यादा दो साल से आगे नहीं उससे भी बच्चे के दिमाग को नुकसान हो सकता है। मुण्डन संस्कार का मतलब बच्चे के माता पिता को बच्चे के पालन के लिये विद्वान् द्वारा शिक्षा देना मात्र उद्देश्य है अन्य कुछ नहीं। जो लोग साल से पहले या पाँच साल तक बाल नहीं कटाते वह बच्चे की हानि करते हैं। कई अनसमझ व्यक्ति किसी देवी देवता के यहाँ जाकर बाल उतरवाते हैं वे ओझे केवल चढ़ावा लेने के अलावा कुछ नहीं जानते कोई शिक्षा नहीं देते। क्या उस देवता की खुराक ही बाल हैं। खुद दुःख पाते हैं बच्चों को दुःख देते हैं। गाड़ी मोटरों में खामखाह की भीड़ करते हैं। वह अनसमझी

की भ्राँन्ति है। अपने घर में ही नाई को बुलवाकर मुण्डन करवाना चाहिये। और किसी विद्वान् को बुला कर हवन करवाना चाहिये। जैसा विधान संस्कार विधि में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है।

५०. कान परोजन

(कर्ण छेदन का बिगड़ा हुआ नाम)

कान परोजन वास्तव में चरक शास्त्र के अनुसार अण्डकोष आदि की बीमारी से बच्चा बच्ची को बचाने के लिये कानों के निचले भाग में छेद किये जाते हैं। (नाक कभी नहीं बिन्धाना चाहिये) किन्तु कुछ स्वार्थी अनसमझ लोगों ने इसे लोगों को खास करके अपने ससुरालियों को लूटने का एक अच्छा अवसर बना लिया है उनसे भात भरवाते हैं कपड़े, जेवर, नकदी आदि लेते हैं यह कतई नाज़ायज़ लूट है। बच्चे को बिमारियों से बचाने के लिये कर्ण छेदन तो करते नहीं चावल का पानी मात्र कानों को लगाकर लोगों से भेंट लूट लेते हैं। यह लूट तो अवश्य ही बन्द होनी चाहिये। और कर्णमेध संस्कार हवन करा कर अवश्य करना चाहियें।

५१. साहबा

जहाँ मुर्दे छोटे वा बड़े दबाये जाते हैं वहाँ से एक अग्नि निकलती है। लोग उसे साहबा (भूत) कहते हैं। वास्तव में वह कोई साहबा वा भूत नहीं है। मनुष्य के शरीर की हड्डियों में फास्फोरस शरीर जलने में सहायता करता है जिसे हम दबाते हैं उसका फास्फोरस रह जाता है। कभी गर्म सर्द के कारण आग लग जाती है और वह अग्नि हवा के बंट (सहारे) फास्फोरस रहने तक जलती हुई चलती है। इसी से लोगों को साहबा भूत का भय हो जाता है। यह तो जड़ अग्नि है उससे डरने की नहीं बचने की जरूरत है। धूर्त लोगों के चक्कर में मत फँसो, उनकी बातों पर विश्वास ना करो, अपनी बुद्धि से सोचो समझो और इन अन्धविश्वासों से दूर रहो।

५२. गूगा

राजस्थान के हनुमानगढ़ ज़िला में भादरा से अठारह किलोमीटर पर एक कब्र के ऊपर मकान बना ओझे लोग लाखों भोले और गरीब लोगों को लूटते हैं। इतिहास के अनुसार गूगा हिन्दू राजपूत शूरवीर नौज़वान था उस समय

शाहजहाँ का राज था। शाहजहाँ के साले के साथ गूगा की जानी दुश्मनी थी। संयोग से एक दिन कब्र वाले सुनसान जंगल से गूगा घोड़े से जा रहा था कि संयोग वश ऊँट पर बैठ कर शाहजहाँ का साला भी वहीं पर आ गया दोनों का लाठियों से संग्राम छिड़ गया। गूगा बलवान् ज्यादा था शाहजहाँ के साले को मार दिया। फिर सोचा शाहजहाँ का राज है वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा गूगा नेपाल में जा छुपा और जीवन पर्यन्त वहीं रहा और वहीं मृत्यु हुई। उधर एक गाँव ढ़ीलकि केवल मुसलमानों का था रास्ता वहीं से था मुसलमानों ने शाहजहाँ के साले को पहचान कर शाहजहाँ को सूचना दी। शाहजहाँ को गूगा के साथ दुश्मनी का पता तो था ही वह समझ गया कि अब गूगा तो डर के मारे तेरे राज्य से भाग चुका। अब तो इज्जत बचानी चाहिये उसने वहाँ तुरन्त उस लाश को छिपा कर घोषणा की कि गूगा मर गया। अब समस्या खड़ी हो गई कि अपने साले मुसलमान को दाग कैसे दे। अब एक चाल और चली कि गूगा मरने से पहले मुसलमान बन गया था इसलिये दाग नहीं दिया जायेगा यह कह कर वहीं पर शाहजहाँ के साले को दफ़ना दिया

गया। इसलिये गूगा को पीर कहने लगे तभी से गलत फ़हमी के कारण हिन्दू इसे पूजते आ रहे हैं। बेचारे गरीब अनसमझ व्यक्ति यहाँ आ कर खूब लुटते हैं। अन्धविश्वास के कारण पहले तो यहाँ गूगा की कब्र ही नहीं है। यदि कहीं हो भी तो मरने के बाद कोई भी जीव किसी का बुरा या भला नहीं कर सकता। क्या किया जाये लोगों को बड़ी भारी भ्राँन्ति है। अन्धविश्वासी लोगों को कुछ समझ आ जाये इसलिये सारा खुलासा किया है।

५३. वस्तु

मूर्खों का धूर्त खाते हैं यह परम्परा चली आ रही है। कुछ स्याने ओझे भोली किन्तु सम्पन्न जनता को बहका कर उनका जहाँ धन हरणकरते हैं वहाँ मानसिक वा शारीरिक रूप से दुःखी भी करते हैं। घर की कौन सी वस्तु कहाँ रखनी चाहिये ये गृहस्थों को टिकने नहीं देते। कई अक्ल के मारों के तो मकान में भी तोड़ फोड़ करवा देते हैं। उधर दरवाज़ा शुभ है इधर अशुभ है कह–कह कर, जबकि मकान वह शुभ है जिसमें रहने के लिये

सभी सुविधायें हों। हवा, रोशनी, सूर्य का प्रकाश भी आता हो। इसे तो वैज्ञानिक इञ्जीनियर ही समझ सकते हैं। यह ओझे क्या जानें। जिस घर में ये सुविधा नहीं होती उस घर में सारी सुविधा बनानी चाहियें और रोज़ाना उस घर में दोनों समय हवन सुगंधित पदार्थ सामग्री में डाल कर वेद मन्त्र बोलकर हवन करना चाहिये। जिस घर में हवा शुद्ध नहीं वहाँ लोग बिमार रहने लग जाते हैं। उस घर को लोग अशुभ कहने लग जाते हैं। इस भ्राँन्ति को मन से निकाल देना चाहिये। हवन करने से सारे रोग दूर भाग जाते हैं। रोज़ाना घर में हवन करना चाहिये।

५४. डाकण

स्वभाव से महिलायें कोमल हृदय वा ममतामयी होती हैं। यदि कोई महिला अपने इस अनमोल खज़ाने को छोड़ कर क्रूर बन जाती है और बच्चों पर वा अन्यों पर जुल्म करती है तो लोग उसे डाकण की पदवी दे दिया करते हैं। किन्तु आज विज्ञान के युग में भी दुर्भाग्य से कुछ महिलाओं को डाकण कह कर मार देते हैं। किसी का बच्चा किसी कारणवश मर गया उसे उसके जिम्मे लगा देते हैं और उसे डाकण कह कर मार देते हैं। यह भ्राँन्ति जुल्म कराती है इससे बचें, अन्य कोई डाकण नहीं होती। ऐसा बुद्धि से जान कर पाप ना करें।

५५. मकान

कुछ लोग अपने मकान को अशुभ समझ कर आधे पैसों में बेच देते हैं। कुछ को भय हो जाता है कि इस मकान में भूत है। वह भी ऐसा ही करते हैं। मकान जड़ है वह शुभ अशुभ कुछ नहीं होता। ना ही भूत होते हैं। इस भ्राँन्ति में नहीं आना चाहिये। ना ही वास्तु शास्त्र के बहकावे में आवें। मकान सभी सुविधाओं, हवा, पानी, धूप युक्त बनायें।

५६. यात्रा

वारों की बड़ी भारी भ्राँन्ति जनमानस में बैठी हुई है। इस वार को यात्रा नहीं करनी चाहिये ना जाने कितने ही भ्रम फैल चुके हैं। वैज्ञानिक अच्छी तरह जानते हैं इन सातों वारों के नाम से हमारी पृथ्वी की तरह सात जड़ ग्रह हैं। यह ग्रह शुभ अशुभ को कुछ भी नहीं जानते वार सभी बराबर हैं। सभी काम अपनी सुविधा के अनुसार करने चाहियें। वार क्या है कौनसा है इसकी कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिये। लेश मात्र कुछ भी बिगड़ने का डर नहीं है। ईश्वर पर भरोसा रक्खो। वही सबका रक्षक, पालक और कर्मों का फल देने वाला है।

५७. काँवड़

सावण के महीने में गंगा से जल लाकर शिवजी की मूर्ति के लिंगपर पानी चढ़ाने का नाम लोगों ने काँवड़ रख रक्खा है। मैं उन धर्मान्धों से दो प्रश्न पूछना चाहता हूँ। गंगा शिवजी की जटा से निकली इसलिये शिवजी की पुत्री हुई पुत्री को बाप के लिंग पर जल चढ़ाना यह कहाँ का धर्म है? कहते हैं जो काँवड़ गाड़ी से लाता है उससे ज्यादा खुश शिवजी उससे होते हैं, जो पैदल लाते हैं। और ज्यादा खुश उससे होते हैं जो रास्ते में रूकते नहीं खड़ी काँवड़ लाते हैं। कई लोग सड़क पर लेट कर लम्बे होकर सड़क नापते चलते हैं इस प्रकार के कार्यों से कोई पुण्य नहीं होता यह तो एक भेड़ चाल है। अज्ञानता के कारण लोग भटक रहे हैं। खामखाह शरीर को कष्ट देते हैं। कोई भी पिता अपने पुत्र को कष्ट देकर खुश नहीं होता। फिर यह कैसा निर्दयी पिता है जिनके पुत्र ज्यादा दुःख पाते हैं। उतना ही यह ज्यादा खुश होता है। बुद्धि से सोच समझ कर काम करना चाहिये। खामखाह काम हर्ज़ करना अपने आपको कष्ट देना। खर्च करना जिसका एक प्रतिशत भी लाभ नहीं, ऐसे कार्य

अनसमझ ही करते हैं। इससे स्वयं बचें औरों को भी इस अन्ध विश्वास से बचायें। यही मेरी सबसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना है।

५८. सम्विधान

दुनियाँ को चलाना हो, देश को चलाना हो, किसी संस्था को चलाना हो, उसके लिये सम्विधान की आवश्यकता पड़ती है। परम पिता परमात्मा ने जब इस सृष्टि को बनाया तो अपना वेद रूपी सम्विधान दिया। इसी तरह जब हमारा देश स्वतन्त्र हुआ तो हमें अपना सम्विधान बनाना पड़ा देखिये अपने सम्विधान की कुछ बानगी।

बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालू जी ने दवा घोटाला किया, चारा घोटाला किया, संसद में जब महिलाओं के लिये तेतीस प्रतिशत के आरक्षण का बिल आया तो उसकी प्रतियाँ फाड़ कर बगाई। किन्तु अपनी अनपढ़ राबड़ी को बिहार का मुख्यमन्त्री पढ़ी लिखी महिलाओं पर बना कर राजपाट सम्भला दिया। दुनियाँ देखती रह गई। पूरे देश ने लालू की निन्दा की किन्तु देश की सबसे बड़ी पञ्चायत संसद में भारत के गृह मन्त्री श्री इन्द्रजीत गुप्त ने संसद में खड़े होकर दोनों हाथ

ऊपर करके घोषणा की, कि लालू प्रसाद ने जो भी किया वह सम्विधान के अनुसार ठीक था। देश के सभी पाँच सौ पन्तालीस साँसदों ने बहुमत से नहीं, सर्वसम्मति से स्वीकार करना पड़ा। यानि कि लालू बेईमान नहीं था उसने जो कुछ किया उसका दोषी लालू नहीं सम्विधान था। उन्नीस सौ छियानवे में सँसद के चुनाव हुये किसी को बहुमत नहीं मिला त्रिशँकु सँसद आई। हम सभी ने रेडियो, दूरदर्शन पर बार-बार सुना कि अब भारत के राष्ट्रपति को अपने विवेक से काम लेना पड़ेगा इससे तीन प्रश्न उभर कर सामने आये क. भारतीय सम्विधान के अनुसार कोई व्यक्ति अनपढ़ विवेकहीन भी राष्ट्रपति बन सकता है फिर विवेक बाज़ार में तो मिलता नहीं। जो दो रुपये का मोल ले आयें। ख. देश विवेक से नहीं चला करता यदि विवेक से ही देश को चलाना था तो सम्विधान क्यों बनाया था। ग. विवेक इस्तेमाल करने की आवश्यकता जब हुई क्योंकि हमारे सम्विधान में कोई व्यवस्था नहीं थी। साँसदों का चुनाव जनता करती है। किन्तु प्रधानमन्त्री के चुनाव पर साँसदों की तलवार लटकी रहती है। इस कारण प्रधानमन्त्री साँसदों की गर्ज़ करके लाभ वाले पद देता है।

कि यह बिगड़ ना जायें और मेरा पद ना छिन जाये। इसी लालच का कारण है कि साँसद बनने के लिये लोग करोड़ों-करोड़ों रुपये खर्चते हैं और बाहुबल का भी प्रयोग करते हैं यही सबसे बड़ी भ्रष्टाचार की नींव है जब हमारे बीस लाख व्यक्तियों का प्रतिनिधि साँसद ही भ्रष्ट हो तो जनता भ्रष्ट क्यों ना होगी यथा राजा तथा प्रजा। हमारे सम्विधान की पकड़ ना होने के कारण आज देश में स्वतन्त्र होने के साठ साल बाद भी तीस करोड़ अनपढ़ हैं शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिये। शिक्षा इतनी महँगी है कि गरीब व्यक्ति अपने बच्चों को शिक्षा देने की सोच भी नहीं सकता। जो शिक्षा दे पा रहे हैं वह और उनके बच्चे भी भारी बस्ता और ट्यूशन से दुःखी हैं। अब देखिये अमरीका के सम्विधान की कुछ झलक। जो देश अपने सम्विधान के कारण ही इस धरती के दोसौ देशों में सबसे विकसित व धनी है। वहाँ के सम्विधान के अनुसार साँसद राज्यपाल वा राष्ट्रपति का सीधा चुनाव जनता करती है। इन तीनों को कोई ताकत सिवाय भ्रष्टाचारी साबित होने के चार साल से पहले नहीं हटा सकते। प्रधानमन्त्री तो वहाँ होता ही नहीं

वहाँ के साँसद मन्त्री या अन्य कोई भी लाभ वाला पद नहीं ले सकते। केवल साँसद ही रहेंगे। संसद में बैठकर कानून बनायेंगे सरकार के अच्छे कार्य की पुष्टि और बुरे कार्य को निरस्त करने के सिवाय और उन्हें कोई काम नहीं होगा फिर वहाँ का साँसद, साँसद बनने के लिये करोड़ों रुपये खर्च क्यों करेगा। यहीं दफ़न हो जायेगा भ्रष्टाचार। वहाँ के सम्विधान के अनुसार देश में कोई स्कूल साढ़े पाँच साल से छोटे बच्चे को दाखिल नहीं कर सकता। ताकि बाल हत्या न हो। साढ़े छः साल के बाद कोई भी अपने बच्चे को घर नहीं रख सकता। इसी कारण वहाँ एक भी व्यक्ति अनपढ़ नहीं है। वहाँ का बच्चा बस्ता लेकर स्कूल नहीं जायेगा। सारा सलेबस स्कूल से ही मिलेगा वहाँ के किसी बच्चे को होम वर्क नहीं दिया जा सकता। यदि अभिभावकों को ट्यूशन देनी पड़ेगी तो वह अपने काम में बेईमानी से पैसे जुटायेगा। यहीं निचले स्तर से भ्रष्टाचार को खत्म कर दिया जाता है। जब तक मेरे देश का वर्तमान सम्विधान पूर्ण रूप से नहीं बदला जाता, यह देश भ्रष्टाचारी ही रहेगा। कोई ताक़त इसे नहीं बचा पायेगी। क्योंकि हमारा सम्विधान भ्रष्टाचार उपलब्ध करवाता है।

५९. गुरुग्रन्थ

आज से लगभग पांच सौ पैंसठ साल पहले खालसा पन्थ नहीं था गुरु नानक देव आदि जो दस गुरु हुये वह सभी हिन्दू ही थे उनके नाम के आगे सिंह नहीं, देव लगता था। गुरु नानक देव जी ने गुरुग्रन्थ की रचना की वह कोई वेद, दर्शन, उपनिषद, अष्टध्यायी, महाभाष्य, व्याकरण के विद्वान् तो थे नहीं साधारण पढ़े लिखे थे। कहीं वेदों की निन्दा कर दी कहीं प्रशँसा। काफ़ी बातें अच्छी लिखी। ईश्वर का नाम एक ओंकार (ओ३म्) ही बताया। गुरु गोविन्द सिंह ने इन्हें सिंह शब्द दिया और खालसा पन्थ खड़ा कर दिया। इसके पीछे उनका उद्देश्य हिन्दुओं की रक्षा के लिये सेना तैयार करना था पन्थ नहीं, किन्तु दुर्भाग्य है कि अब सिख और हिन्दू दो सम्प्रदाय बन गये और भाषा के आधार से दो हिस्सों में बँट गये और हिन्दी के बदले अंग्रेजी को अपनी भाषा बना लिया और शराब पीना और मांस खाना शुरू कर दिया। अपने गुरुओं की बात नहीं मानते किसी भी गुरु ने शराब पीना और मांस खाने का उपदेश नहीं दिया इसलिये इन बुराइयों को छोड़कर अपना जीवन सुधारना चाहिये।

६०. बामन या ब्राह्मण

ब्राह्मण के तीन कर्त्तव्य हैं यज्ञ करना और कराना। दान लेना और देना, पढ़ना और पढ़ाना। ब्राह्मण वही नहीं है जो

ब्राह्मणी के पेट से पैदा हुआ हो जिस व्यक्ति ने वेद वा वेदानुकूल ग्रन्थ पढ़े हों वही ब्राह्मण है वह चाहे किसी के भी पेट से पैदा क्यों ना हुआ हो। बामण उसको कहते हैं जो मुँह बाये श्राद्धों में मण खाये। वह ब्राह्मण नहीं बामण है। बामण यज्ञ कराता है करता नहीं। दान लेता है देता नहीं। पढ़ाता है किन्तु पैसे लेकर। प्रत्येक गृहस्थी को सच्चे ब्राह्मण देख कर ही नज़दीक लगने देना चाहिये।

६१. लोग नास्तिक क्यों बनते हैं?

एक राजनैतिक उद्योगपति, व्यापारी, भूपति बिना मेहनत के अनैतिक तरीकों से जनता पर अन्याय करता हुआ धन सँग्रह करके अपने पुत्र-पुत्री की शादी पर लाखों का पाण्डाल बना कर लाखों की सज़ावट करके, लाखों रुपये डाँसरों को देकर नचाता है। तब वह गरीब चौदह घण्टे मेहनत कर, रिक्शा चला पसीना बहाकर भी अपने भूखे मरते बिमारी से पीड़ित बच्चों की चिंघाड़ सुन कर पण्डित जी से पूछता है पण्डित जी भगवान् ऐसा क्यों करता है तो वह पण्डित जी कहता है कि भगवान् ने तेरे भाग्य में ऐसा ही लिखा है। उस राजनैतिक के भाग्य में ऐसा ही लिखा है। यह तो भाग्य का खेल है। यह सुन

कर वह भूख का मारा एकदम नास्तिक बन जाता है और उसके मुँह से निकलता है जिस भगवान् ने मेरा इतना बुरा किया ऐसे भगवान् को भला मैं क्यों मॉनू। उसे यह नहीं पता कि यह मेरे पिछले जन्म का ही दुःख रूपी फल मुझे भोगना पड़ रहा है इसलिये उसे ईश्वर की न्याय व्यवस्था मान कर उस ईश्वर को कभी नहीं भूलना चाहिये उसे याद रखना चाहिये।

६२. ईश्वर, जीव व प्रकृति

ईश्वर जीव प्रकृति के विषय में भ्रान्तियाँ हैं कुछ नास्तिक कहते हैं कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है, कुछ लोग कहते हैं कि जीव केवल मात्र परमात्मा का अँश है, यह कैसा मोक्ष जिनका अस्तित्व ही खत्म हो जाये। मृत्यु के बाद आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है ऐसा मानते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रकृति आदि कुछ नहीं है जैसे मुसलमान कहते हैं खुदा ने कहा 'हो जा' और संसार हो गया। यह तीनों भ्रान्तियाँ हैं। ईश्वर, जीव, प्रकृति हमेशा थे, हैं और रहेंगे। यदि ईश्वर नहीं है। तो इतनी सुन्दर सृष्टि किसने रची कौन ऐसे व्यवस्थित ढंग से इसे चला रहा है। कलम कागज़ दोनों सौ साल तक रक्खे रहें क-का भी अस्तित्व नहीं होगा। जीव का कुछ अस्तित्व ही नहीं

है तो इतनी सुन्दर सृष्टि किसके लिये रची। जीव को ईश्वर में लीन होना है तो बुरे कर्म करने में क्या डर। उसे ना ही जन्म मिलना न दण्ड, दुनियाँ की कोई चीज़ खत्म नहीं की जा सकती रूप बदल सकते हैं। परमाणु के रूप में प्रकृति अवश्य रहेगी। खुदा ने किससे कहा कि 'हो जा' जब परमाणु ही नहीं इसका मतलब परमाणु था। और इन परमाणुओं को एक ईश्वर ही है जो इन्हें इकट्ठा करके सृष्टि को बना सके। इसलिये तीन चीज़ कभी से अनादि हैं-ईश्वर, जीव और प्रकृति। इन तीनों को बनाने वाला कोई नहीं है। यह तीनों सदा से अनादि हैं।

६३. तप

विद्या ग्रहण करते अपना कार्य निष्ठापूर्वक करते अपने बड़ों की सेवा करते देश सेवा करते हुये जो कष्ट आये उन्हें खुशी से सहन करना ही तप है। अन्य सभी जो अपने शरीर को कष्ट देते हैं, खड़े तपते हैं कई चारों तरफ़ अग्नि जला कर तपते हैं आदि-आदि का जो ढ़ोंग करते हैं वह कोई तप नहीं बल्कि उन्हें पाप होता है। जो दुर्लभ मानव शरीर उसे मिला था उससे

परोपकार ना करके शरीर को ही कष्ट देने में लगा रहा। यह पाप ही तो है। अपनी बुद्धि से सोच कर देखें।

६४. सावा (विवाह)

ब्याह शादी के लिये केवल चार मास ही अनुकूल हैं- आश्विन, कार्तिक, फागुण, चैत्र बाकी दिनों में तो कभी अति गर्मी, कभी अति सर्दी, कभी अति बरसात इन दिनों में ब्याह करने में बड़े ही कष्ट उठाने पड़ते हैं स्वयं तो उठाते ही हैं आने वालों को भी कष्ट देते हैं। चानण पक्ष हो तो और भी अच्छा जिस दिन घर परिवार रिश्तेदारी में चारों ओर प्रसन्नता हो लड़की के रजस्वला के चार दिन बाद विवाह करना चाहिये। यह सभी बातें पतरों में कहाँ से मिलेंगी। सावा निकालने का खामखा का हव्वा है। सावे से तो दूर ही रहना चाहिये। जो लोग सावा के दिन ब्याह करते हैं वह बहुत दुःख पाते हैं सभी चीज़ें महँगी हो जाती हैं। धर्मशाला, हलवाई, बैण्ड आदि कई बार तो बहुत कठिनाई से बहुत महँगे मिलते हैं। सावे वाले दिन तो भूल कर भी शादी ना करें। शादी को शादी रक्खें बरबादी ना बनायें। ज्यादा धन बर्बाद करने की बजाये इसे किसी गरीब पर खर्चें। आपकी चमक दमक को देख कर उग्रवादी ही पैदा

होंगे। लोग आपके मुँह पर तो प्रशँसा करते हैं किन्तु पीछे से फिजूल खर्ची की निन्दा होती है। इसलिये फिजूलखर्ची ना करें, दिन के समय ही विवाह करें रात को नहीं। सादगी पूर्वक भोजन करें और शुद्ध घी का ही प्रयोग करें। आजकल शादी में जो दुकानें लगने लग गई हैं इन्हें बन्द करना चाहिये।

६५. प्रेत

भीरू लोग भूत के छोटे भाई को प्रेत कहते हैं उससे रात के अँधेरे में खूब डरते हैं वास्तव में प्रेत नाम की कोई ऐसी चीज़ नहीं जो हमारा कोई नुकसान कर सके। लोगों की समझदारी ना होने के कारण ऐसा है। वास्तव में प्रेत उसे कहते हैं जो कोई मर गया किन्तु अभी अन्तिम संस्कार नहीं किया। मृत शरीर (डैड बाडी) का नाम ही प्रेत है अन्य कोई प्रेत नहीं होता।

६६. शनि देवता

शनिवार को कुछ लोग लोहे की शनि की मूर्ति बनाकर बाल्टी में डाल घर-घर फिरते पैसे वा तेल माँगते हैं। लोग अपना शनि उतारने को खूब पैसे वा तेल डालते हैं। ज़रा सोचें वह एक अदना सा व्यक्ति सबका शनि उतार कर अपने ऊपर ले लेता है। उसका अपना तो उस पर है ही, भला वह इतना

मजबूत कैसे हो गया कि सबका शनि ओट लेता है। तुम इतने कमज़ोर (कायर) कैसे हो गये कि अपना ही शनि नहीं ओट पाये। ऐ भोले लोगो इस अन्धविश्वास से बचो। शनि तो ग्रह का नाम है वह किसी को सुख वा दुःख नहीं देता, क्योंकि वह जड़ है, चेतन नहीं। मैंने एक बार तेल की बाल्टी में जो लोहे का पतरा पड़ा था उसे चुम्बक से बाहर निकाल दिया था और उससे कहा देख मेरा शनि ज्यादा ताक़त वाला है फिर कभी मेरी दुकान पर मत आना आयेगा तो तेल सहित बाल्टी रख लूँगा।

६७. नीम्बू-मिर्च

शनिवार को एक नीम्बू सात हरी मिर्च धागे में पिरोकर अपने-अपने प्रतिष्ठानों पर लटका देते हैं कहते हैं कि नज़र नहीं लगेगी भूत प्रेत नहीं आयेंगे। ऐ भोले लोगो सँसद भवन, राष्ट्रपति भवन में एक मिर्च भी नहीं टँगी, उसे नज़र कभी नहीं हुई। उसमें कभी भूत नहीं आये, जब भूत आदि आयेंगे तो क्या इस नीम्बू-मिर्च रूपी तोप से गोले निकलेंगे। खामखा निम्बू मिर्च महँगे ना करें इन्हें खाकर सपदुपयोग करें। वही तोप सात दिन के बाद पैरों के नीचे कुचलती फिरती है। इन पाखण्डों से बचो और उस ईश्वर के भरोसे रहा करो जो सबका रक्षक, पालक और हमारे अच्छे-बुरे कर्मों को देखता है और उनका फल देता है।

६८. मकान पर काली हाँडी, या जीभ वाला लोहे का काला पतरा

कई भोले लोग मकान बना कर उस पर एक काली हाँडी या जीभ वाला लोहे का काला पतरा लगा देते हैं, ताकि मकान को नज़र ना लगे। राष्ट्रपति भवन जिसमें तीन सौ अठाईस कमरे हैं उसे तो हाँडी या पतरे के बिना नज़र नहीं लगी इसके छोटे से मकान को नज़र लग जायेगी। यह उनकी अनभिज्ञता है। वास्तविकता तो यह है कि मकान बनाते समय आसमानी बिज़ली का ध्यान रखना चाहिये जमीन के अन्दर दस पन्दरह फुट का गहरा खड्ढ़ा खोद कर उसमें ताम्बे का तार, नमक, कच्चा कोयला डाल उस तार को मकान के आखरी तक ले जाना चाहिये आखिर में उस तार को गोल करके नमक, कोयला, तारकोल लगा कर छोड़ देवें ताकि कभी कभार आसमानी बिज़ली तेज आने पर मकान ना फट जाये। इस विधि से तो मकान बच सकता है काली हाँडी बेचारी तो एक कंकड़ भी नहीं ओट सकती। कुछ लोग कहते हैं दुकान शेरमुखी, मकान गऊमुखी हो वही शुभ होता है। शुभ अशुभ

कुछ नहीं, असलियत तो यह है कि दुकान का फ्रन्ट जितना ज्यादा होगा उतना ही अच्छा होगा मकान का फ्रन्ट जितना कम होगा चारों तरफ से दबा हुआ होगा वही अच्छा है। क्योंकि भूकम्प आदि में चारों तरफ से दबे हुये मकान को खतरा नहीं रहता।

६९. नेत्र दान

आज देश में एक करोड़ बीस लाख व्यक्ति नेत्रहीन हैं जबकि देश में अस्सी लाख व्यक्तियों की हर साल मृत्यु हो जाती है यदि सभी मृत्यु उपरान्त नेत्रदान देने लग जायें तो दो साल के बाद देश में एक भी नेत्रहीन दिखाई नहीं देगा। यह बहुत ही चिन्तनीय और खेद का विषय है। इस पुण्य के कार्य में भी अन्धविश्वास ही बाधा है। कुछ देश को रसातल में ले जाने वाले ओझों ने एक भ्राँन्ति फैला रखी है कि जो मृत्यु उपरान्त आँखें दान में दें जाते हैं उन्हें अगले जन्म में आँखें नहीं मिलती। किन्तु वास्तविकता यह है कि जो संसार में दान करके धन का सदुपयोग करता है परमात्मा धन उसी को देता है और जो अपने धन को जुआ-शराब आदि में बर्बाद करता है। परमात्मा उसके

धन को खत्म कर देता है। इसी सिद्धान्त के अनुसार परमात्मा उन्हें ही आँखें देता है जो अपनी आँखें दूसरों को दान करके सदुपयोग करता है। जो अपनी आँखों को जलवा कर या दफ़ना कर दुरुपयोग करते हैं उन्हें आँखें दान करने की तुरन्त प्रतिज्ञा करनी चाहिये और परिवार को कह कर मरें कि मेरी आँखें दान करना ना भूलें।

७०. मृतक क्रिया

जब जीवात्मा शरीर से निकल जाता है तब इस शरीर को शव कहते हैं इसका अच्छी प्रकार से दाह संस्कार ही मृतक क्रिया है। घर से आग लेकर चलना गोसा (उपला) जला कर ले जाना, आटे के गोले काले तिल डाल कर शव के ऊपर रखना, जल का घड़ा ले परिक्रमा करना फिर उसको फोड़ना, यह सब गलत रिवाज़ इन पाखण्डी बामणों ने चला रक्खा है। मुख्य काम छोड़ दिये उल्टे शुरू कर दिये। होना तो यह चाहिये था कि संस्कार वेद मन्त्र बोलकर, उनसे शुद्ध घी और जड़ी बूटियों से बनी सामग्री से आहुति दे-दे कर सुगन्ध फैलाते। कम से कम दस किलो घी, दस किलो सामग्री से गरीब से गरीब लोगों का दाह संस्कार होना चाहिये। अमीर लोगों को चाहिये कि गरीबों के दाह संस्कार में आधा-आधा किलो घी का दान करके गरीबों की मदद करके पुण्य के भागी बनें। रिस्तेदार जो मरे हुये पर चादर उढ़ाते हैं उससे कोई पुण्य नहीं होता पाप ही लगता है क्योंकि उन कपड़ों को भंगी या चारज़ उठा कर ले जाकर बेच देता है।

उन पैसों से शराब पीता है, माँस खाता है। इसलिये उससे आपको भी पाप लगता है। इसलिये चादर की जगह घी सामग्री ले जाया करें। अधिक (तीस) किलो घी और (तीस) किलो सामग्री से संस्कार करें क्योंकि शव के जलने से जो दुर्गन्ध फैलती है उसके बचाव के लिये ही घी और सामग्री से संस्कार किया जाता है। फिर घर जाकर भी हवन करना चाहिये क्योंकि शव की दुर्गन्ध घर में भी फैल जाती है जिससे कई बिमारियाँ फैलती हैं। शान्तिकरण के मन्त्रों से आहुति देनी चाहियें जो संस्कार विधि में लिखी हैं। उसके बाद कोई क्रिया नहीं होती अस्थियों को उठाकर वहीं शंमशान में कहीं गड्ढ़ा खोद कर दबा दें। राख को बोरी में ले जाकर खेतों में डाल दें बस इतना ही करना चाहिये, अस्थियों को गंगा में डालना आदि तो जल को दूषित करना ही है। उससे कोई धर्म नहीं होता उल्टा पाप लगता है, पानी गन्दा होने से रोग फैलते हैं। तेरहवीं पर चारज़ व बामण को बुला कर उसको माल खिलाना हलवा पूरी आदि और मरे हुये को वैकुण्ठ पहुँचाना, बाछड़ी या गाय की पूँछ पकड़ना, बामण या बाहमणी को झूला झुलाना, खाट बिस्तर, कपड़े, बर्तन, ज़ेवर आदि देना सब छोड़ देना चाहिये क्योंकि मरने के बाद जीवात्मा का हमें पता नहीं होता कि उसे परमात्मा कहाँ और किस जूनी में जीव को भेजता है और कैसा शरीर देता है। बामण डाकिया तो है नहीं जो सारा अता-पता मरे हुवे रखता हो। सो आप सभी अपनी बुद्धि से सोचें और इन गलत रीतियों को छोड़ें जिससे

आप सुखी रहें और आपका परिवार भी सुखी रहे यही मेरी कामना है। गौओं को चारा, अच्छी जगह वेद प्रचार के लिये दान दें। वार सभी शुभ होते हैं। मंगलवार और वृहस्पतिवार को बाल कटा लेने चाहिए।

बिल्ली रास्ता काट गई, सोमवार को दशाशूल के कारण सफ़र नहीं करना, शनिवार को अस्थियाँ नहीं उठानी शनिवार को किसी के घर अफ्सोस करने नहीं जाना, ऐसी-ऐसी ना जाने कितनी भ्राँन्ति देश में फैली हुई हैं परमात्मा ने आपको बुद्धि विशेष दी है उसका प्रयोग करें और इन अन्धविश्वासों और कुरीतियों से बचें। अँगूठी में फंला पत्थर डालने से ऐसा हो जायेगा, इस अँगूली में मूँगा, इस में मोती, इसमें पुखराज, इसमें नीलम, इसमें हीरा, इसमें माणक, इसमें लहसूनियाँ, इसमें पन्ना आदि ये सब पत्थर ही तो हैं इनके पहनने से कोई लाभ नहीं होता, हाँ धन की हानि जरूर होती है। ऐसे-ऐसे ना जाने जन साधारण में कितने ही अन्धविश्वास फैले हुये हैं। यदि सभी को लिखा जाये तो यह पोथी नहीं पोथा हो जायेगा। इसीलिये इतना ही लिख रहा हूँ। आप राजस्थान में जोधपुर की तरफ़ जाकर देखें वहाँ शनिवार के दिन ही सारे काम करते हैं।

आशा है इस पुस्तक को पढ़कर आप अपने जीवन को पाखण्डों से बचाकर सुखी करेंगे।

आपका हितैषी
रामसुनि आर्य वानप्रस्थ

मलेरिया बुखार के लिये अचूक औषधि

एक ग्राम भुनी हुई फिटकड़ी का पाऊडर, एक नींबू के रस में मिला कर दिन में तीन बार पीने से सब प्रकार का बुखार उतर जाता है। इसे चार-पाँच दिन तक पीवें।

बवासीर के लिये

१. निम्बोली के कच्चे १० बीज चबा कर ऊपर से पानी पी लें। दो-तीन बार खाने से खूनी बवासीर बन्द हो जाती है। २. रीठे का छिलका जला कर भस्म बना लें। एक ग्राम भस्म शहद में मिला कर खायें, बवासीर में लाभ होगा। ३. मोती सीप को गुलाब जल डाल कर बारीक घोट कर सुखा लें। दो रत्ती पाऊडर मक्खन में मिला कर खायें।

ताकत के लिये

काली छोटी हरड़ १०० ग्राम शीशे के गिलास में डाल कर थोड़ा सा पानी डाल लें और १२ घण्टे तक भीगने दें बाद में निकाल कर सुखा लें। फिर देशी घी में भून कर रख लें। एक हरड़ प्रातः, एक रात को सोते समय खायें। शरीर को शक्ति मिलेगी।